भैरव उपासना
श्री भैरव पूजन यन्त्र
रणधीर प्रकाशन

श्री
भैरव उपासना

संग्रहकर्ता एवं अनुवादक:—

योगीराज यतीन्द्रनाथ जी

भैरव उत्पत्ति की कथा	—	श्री भैरव चालीसा
श्री भैरवाष्टकम्	—	भैरव के १०८ नाम
भैरव सहस्त्रनाम स्तोत्र	—	बटुक भैरव स्तोत्र
श्री भैरव चेटक	—	भैरव अपराध क्षमापन स्तोत्र
बटुक भैरव मन्त्र	—	भैरव उपासना विधि
श्री भैरव ध्यानम्	—	पूजन यन्त्र जप तथा होम
भैरव साधना मन्त्र	—	श्री भैरव कवच
भैरव जी की आरती	—	भैरोंनाथ एक दन्त कथा

आदि विषयों से परिपूर्ण

मूल्य : ₹ 100.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार–249401

प्रकाशक:

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार

फोन : (01334) 226297

वितरक :

रणधीर बुक सेल्स

रेलवे रोड, हरिद्वार

फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता :

गगन बुक डिपो

4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

शब्द शज्जा :

मधुर ग्राफ़िक्स, दिल्ली-6

पुस्तक में दिए गये मन्त्रों के लाभ अन्य लोगों को भी अवगत करायें। लेकिन अपनी प्रयुक्त पुस्तक अन्य किसी को कदापि न दें।

मद्रक :

स्टार ऑफसेट प्रिंन्टिग प्रेस, दिल्ली-6

SHREE BHAIRAV UPASANA

Collected & Translated by : Yogi Raj Yatindra Nath Ji

Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

विषय सूची

विषय का नाम *पृष्ठ संख्या*

१. भैरव पूजन यन्त्र ... ५
२. श्री भैरव ध्यानम् ... ६
३. श्री भैरव के सम्बन्ध में ... ७
४. भैरव उत्पत्ति की कथा ... ८
५. भैरव के स्वरूप ... १४
६. भैरव उपासना ... १५
७. सामान्य पूजा विधि ... १६
८. श्री भैरव स्तुतिं ... १७
९. श्री भैरव चालीसा ... १९
१०. श्री बटुक भैरव चालीसा ... २१
११. श्री भैरवाष्टक (सरल काव्यानुवाद) ... २४
१२. श्री काल भैरवाष्टकम् ... २६
१३. श्री भैरव स्तवन ... २८
१४. श्री भैरवाष्टकम् ... २८
१५. श्री बटुक भैरव सहस्रनाम स्तोत्र ... ३०
१६. आपदा उद्धारक बटुक भैरव अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ... ४६
१७. श्री भैरव के १०८ नाम ... ५३
१८. श्री भैरव अपराध क्षमापन स्तोत्र ... ५६
१९. श्री बटुक भैरव उपासना ... ५८
२०. भैरव पूजा विधि ... ५९
२१. श्री भैरव ध्यानम् ... ६१
—सात्विक ध्यान ... ६१
—राजसिक ध्यान ... ६२
—तामसिक ध्यान ... ६२

—ध्यान का फल	...	६३
—आवरण पूजा	...	६४
—पुरश्चरण	...	६६
—बलि विधान	...	६६
—बलि मन्त्र	...	६७
२२. भैरव पूजन यन्त्र जप तथा होम	...	६७
२३. भैरव साधना के मन्त्र	...	६९
२४. भैरव चेटक	...	७२
२५. आपत्ति उद्धारक बटुक यन्त्र	...	७३
२६. श्री त्रिपुर भैरव यन्त्र	...	७३
२७. बटुक भैरव षट्कर्म प्रयोग	...	७५
२८. विविध प्रयोगों के लिए हवन सामग्री	...	७७
२९. श्री बटुकभैरव कवचम्	...	७८
३०. श्री स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्रम्	...	८०
३१. श्री क्षेत्रपाल भैरवाष्टक स्तोत्रम्	...	८८
३२. श्री बटुकभैरव ब्रह्म कवचराज	...	९०
३३. श्री भैरव जी की आरती (१)	...	९२
३४. श्री बटुक भैरव की आरती (२)	...	९३
३५. आरती श्री भैरव जी की (३)	...	९५
३६. भैरवनाथ की आरती (४)	...	९६
३७. भैरवनाथ जी की अर्जी (मेंहदीपुर वाले)	...	९७
३८. श्री बटुक भैरव के भयनाशक दस नाम	...	९८
३९. पुष्पांजला प्रार्थना	...	९९
४०. श्री भैरवनाथ एक दन्त कथा	...	१००
४१. उज्जैन के काल भैरव	...	११०
४२. उन्मत्त भैरव	...	१११

●●●

श्री भैरव पूजन यन्त्र
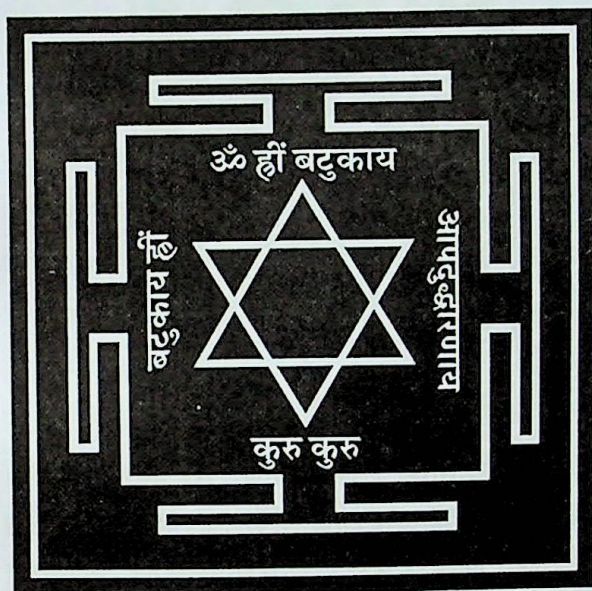
श्री भैरव महामन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय
कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।
"ॐ नमः शिवाय"

श्री भैरव ध्यानम्

ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तम् शशिकलाधरं मुण्डमालं महेशं।
दिग्वस्त्रं पिङ्गलाक्षं डमरुमथ सृणिं खड्गशूलाभयानि।
नागं घण्टां कपालं कर सर सिरुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं।
सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत्किङ्किणी नूपुराद्यम्॥

भैरव के शरीर की कान्ति नील-पर्वत के समान है। वे चन्द्रकला तथा मोतियों की माला को धारण करने वाले, दिगम्बर तथा पिंगल वर्ण नेत्रों वाले हैं। उन्होंने अपने हाथों में डमरू, अंकुश, खड्ग, शूल, अभयमुद्रा, सर्प, घंटा तथा नरमुण्ड को धारण कर रखा है। उनकी दंतपंक्ति भयानक है, वे तीन नेत्रों वाले हैं तथा मणिमय किंकिणी, नूपुरादि आभूषणों से अलंकृत हैं।

श्री भैरव के सम्बन्ध में

- ब्रह्मा द्वारा शिवजी की निन्दा तथा स्वयं को सर्वशक्तिमान घोषित किये जाने पर, उन्हें वास्तविकता का ज्ञान कराने के उद्देश्य से ही भगवान शंकर भैरव रूप में अवतरित हुए।
- पहले ब्रह्मा के पांच मुख थे, उनमें से जिस मुख ने शिवजी की निन्दा की थी उसे भैरव ने अपने बायें हाथ की उंगली के तीक्ष्ण नख से काट दिया था। तभी से ब्रह्मा चतुर्मुखी हैं।
- श्री भैरव के उत्पन्न होते ही ब्रह्मा ने उन्हें यह वर दिया कि अब से काशी वासियों का लेखा-जोखा चित्रगुप्त नहीं रखेंगे। काशी निवासियों को दण्ड देने का अधिकार उन्हें होगा। इसी कारण भैरव काशी के कोतवाल कहे जाते हैं।
- श्री भैरव भगवान शंकर के पाँचवे अवतार हैं और काशी क्षेत्र में जो प्राण त्याग करता है उसे वे मुक्ति प्रदान करते हैं।
- पुस्तक के अन्त में दी गई 'भैरवनाथ एक दन्त कथा' जिसे पढ़कर श्री भैरोंनाथ के विषय में ज्ञान की वृद्धि कर सकेंगे।
- उज्जैन के कालभैरव और काशमीर के उन्मत्त भैरव के विषय में चमत्कारिक कथाएँ भी पढ़ें।
- श्री भैरव साधना मन्त्र और भैरव चेटक, त्रिपुर भैरव यन्त्र इत्यादि के प्रयोग द्वारा आप मनोभिलाषित लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

श्री भैरव उत्पत्ति की कथा

महर्षि अगस्त्य द्वारा भैरव जन्म के विषय में प्रश्न किये जाने पर स्वामी कार्तिकेय ने उनसे जो कुछ कहा उसका वर्णन स्कन्द पुराण में इस प्रकार है—

एक समय सुमेरु पर्वत पर बैठे हुए ब्रह्मा आदि अनेक देवताओं को प्रणाम कर ऋषियों ने उनसे पूछा—हे प्रभो! आप में सबसे बड़ा देवता कौन है?

उस समय भगवान शंकर की माया के वशीभूत होकर ब्रह्माजी ने अंहकार में भरकर कहा—ऋषियों! इस सम्पूर्ण दृश्यमान सृष्टि को उत्पन्न करने वाला मैं ही हूँ। मुझे किसी ने उत्पन्न नहीं किया, मैं स्वयम्भू हूँ। अतः अनादि ब्रह्म होने के कारण मैं ही सब देवताओं में श्रेष्ठ और बड़ा हूँ। मैं ही ईश्वर कहा जाता हूँ।

ब्रह्मा की यह अहम् भरी बात सुनकर समीप ही बैठे श्री नारायण के अंश ऋतु को क्रोध आ गया।

उन्होने कहा—अरे ब्रह्मा! तुम अज्ञान के वशीभूत होकर ही यह बात कह रहे हो। सम्पूर्ण जगत का कर्ता और पालन करने वाला तो मैं हूँ। मैं ही नारायण की परमज्योति तथा परागति हूँ। मेरी प्रेरणा से तुम सृष्टि को उत्पन्न करने वाले हो।

मैं सबका स्वामी तथा परमतत्व नारायण हूँ। अतः तुम स्वयं को बड़ा मत कहो।

इस प्रकार ब्रह्मा और ऋतु दोनों ही स्वयं को बड़ा बताते हुए परस्पर विवाद करने लगे। अन्त में निश्चय यह हुआ कि इस सम्बन्ध में वेदों की सम्मति ली जाये।

तब ब्रह्मा और ऋतु दोनों ने वेदों से जाकर पूछा—हे श्रुतियों! आप स्वतः प्रमाण हैं अतएव हमारे संदेह का निवारण करो कि हम में से बड़ा कौन है?

यह सुनकर ऋग्वेद ने कहा—जिससे सबका प्रादुर्भाव हुआ है और जिसमें सब कुछ समाहित होता है, वे एकमात्र रुद्र ही परमतत्व हैं।

यजुर्वेद ने कहा—जिनकी योग द्वारा प्राप्ति करने में लोग लगे रहते हैं, वे एकमात्र शिव ही हैं।

सामवेद ने कहा—जिसके प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित रहता है, योगीजन जिसका ध्यान लगाये रहते हैं, सारा संसार जिसके भीतर है वह एकमेव त्र्यम्बक ही श्रेष्ठ हैं।

अथर्ववेद ने कहा—जो अपने भक्तों से साधारण अनुग्रह पर ही उनके सारे कष्टों को दूर करते हैं वह आनन्ददायी कैवल्यरूप भगवान शंकर ही हैं।

माया से अत्यधिक मोहित हुए ऋतु तथा ब्रह्मा दोनों वेदों का यह फैसला सुनकर भी अहंकार में आकर कहने लगे—जो शिव धूलि-धूसरित, जटाधारी, नागों को ही आभूषण समझते

हैं, दिगम्बर और सवारी के लिये भी जिसे बैल मिला है वह परब्रह्म कैसे हो सकता है? हम उसे परमात्मा नहीं मानते।

उसी समय सनातन ॐ (प्रणव) ने उस स्थान पर मूर्तिमान होकर उन्हें पुनः समझाया कि भगवान शंकर सनातन ज्योति हैं। आनन्दरूपा शिवा उनकी अमिट शक्ति हैं। अतः यह नितान्त सत्य जानो कि उनसे बड़ा कोई नहीं है।

प्रणव द्वारा समझाये जाने पर भी ब्रह्मा तथा ऋतु के मन को सन्तोष न हुआ। तभी अचानक यह घटना घटी कि उन दोनों के मध्य से एक महान तेजस्वी ज्योति उठी। उस ज्योति ने अपनी आभा में सभी को समेट लिया। फिर उस ज्योतिपुँज के मध्य में एक व्यक्ति दीखने लगा। उस ज्योति में एक पुरुष को देखकर ब्रह्मा का पाँचवा मस्तक अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहने लगा—हम दोनों के बीच आने वाला तू कौन है? उसी क्षण वह पुरुष बालक रूप में परिवर्तित होकर रोने लगा। तब ब्रह्मा ने यह समझकर कि यह बालक मेरे मस्तक से उत्पन्न हुआ है उसे यह कहना शुरू कर दिया—तुम मेरे मस्तक से प्रकट होकर रूदन कर रहे हो इसलिए मैं तुम्हारा नाम '**रुद्र**' रखता हूँ। अब तुम मेरी शरण में रहो, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।

अभिमानी ब्रह्मा की बात सुनकर वह बालक भैरव आकृति में बदल गया।

ब्रह्मा उस ज्योति से उत्पन्न पुरुष को इस प्रकार कहने लगे—हे वत्स! सम्पूर्ण विश्व के भरण-पोषण की सामर्थ्य

रखने के कारण तुम्हारा नाम 'भैरव' होगा। तुमसे काल भी भयभीत रहेगा अतः तुम कालभैरव के नाम से भी प्रसिद्ध होगे। तुम दुष्टों का दमन करते रहोगे अतः तुम्हे आमर्दक भी कहा जायेगा। तुम भक्तों के पापों को क्षण में ही भक्षण कर लोगे इसलिए तुम्हें लोग 'पाप भक्षण' भी कहेंगे। तुम मुक्तिदायिनी काशीपुरी के अधिपति होकर 'कालराज' का पद प्राप्त करोगे। काशीपुरी में रहकर जो भी व्यक्ति पाप करेगा उसे तुम स्वयं दण्ड दोगे। अब से चित्रगुप्त किसी भी काशीवासी का लेखा-जोखा नहीं रखा करेगा।

सर्वप्रथम तो ब्रह्मा द्वारा दिये गये इन वरों को भैरव ने ग्रहण किया फिर ब्रह्मा के पाँचवे मस्तक को, जिसने शिवजी की निन्दा की थी उसे अपने बाँये हाथ की उँगली के नख से काट दिया और कहा—हे ब्रह्मा! तुम्हारे जिस भाग ने अपराध किया था उसे मैंने दण्ड दे दिया है। तुम्हारे पाँचवें मस्तक ने शिवजी की निन्दा की थी, इसलिये मैंने उसे काट डाला।

अपना मस्तक कट जाने के बाद ब्रह्मा को ज्ञात हुआ कि शिवजी ही सबसे बड़े और परब्रह्म हैं। तब ब्रह्मा भयभीत होकर भगवान शंकर की स्तुति करने लगे। फिर विष्णु भी वहीं प्रकट होकर ब्रह्माजी के साथ-साथ शिवजी की प्रसन्नता के लिये अनेक प्रकार से स्तुति करने लगे।

विष्णु और ब्रह्मा द्वारा की गई स्तुति से शिवजी ने प्रसन्न होकर अभय प्रदान किया। इसके पश्चात् उन्होंने अपने ही

अवतार भैरव को यह आज्ञा दी—भैरव! तुम लोक प्रदर्शन के लिये ब्रह्मा के इस कटे हुए मस्तक को अपने हाथ में लेकर भिक्षा याचना करते हुए विश्व का भ्रमण करो और इस ब्रह्महत्या के पाप का प्रायश्चित करो।

यह कहकर शिवजी ने ब्रह्महत्या नाम की एक कन्या उत्पन्न की। वह लाल वस्त्रों को धारण किए हुए थी तथा उसके शरीर पर लाल रंग का लेप था। उसक मुख भयावना था और जीभ लपलपा रही थी। वह आसमान से टपकने वाले रक्त का पान कर रही थी। उसके एक हाथ में कैंची तथा दूसरे हाथ में खप्पर था और वह भीषण गर्जना करती हुई चली। शिवजी ने उसे आदेश देते हुए कहा—ब्रह्महत्ये! जब तक भैरव तीनों लोकों में भ्रमण करते हुए काशीपुरी में नहीं पहुँच जाते तब तक तुम इसी भीषण रूप में उनका पीछा करती रहो। तुममें सर्वत्र प्रवेश करने की समर्थ तो होगी परन्तु काशीपुरी में ही तुम प्रवेश न कर सकोगी। यह कहकर शिवजी अर्न्तधान हो गये। तब हाथ में कपाल लिये भैरव ब्रह्महत्या से मुक्ति पाने के लिये तीनों लोकों का भ्रमण करने लगे। इस प्रकार उन्होंने अनेक स्थानों, नगरों और तीर्थों का भ्रमण किया।

जब भैरव विष्णु लोक पहुँचे, उस समय भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी से कहा—हे प्रिये! यह शिवजी की अपार लीला ही है कि समस्त पापों के नाश की सामर्थ्य रखते हुए भी वे अपने भैरव रूप में ब्रह्महत्या के पाप से मुक्ति पाने के लिए सर्वत्र

भागते फिर रहे हैं। इस प्रकार वे अपनी लीला द्वारा भक्तों को आनन्दित तथा पाप के परिणामों के सम्बन्ध में सजग कर रहे हैं।

इस प्रकार समस्त लोकों में अपनी लीला का प्रदर्शन करते हुए भैरव अविमुक्त तीर्थ काशीपुरी में प्रवेश कर गये। काशी में प्रवेश करते ही ब्रह्महत्या नाम की कन्या ने उनका पीछा छोड़ दिया। क्योंकि भगवान शिव की प्रियपुरी काशी में प्रवेश की सामर्थ्य उसमें न थी।

उधर भैरव के काशीपुरी में प्रवेश करते ही उनके हाथ से ब्रह्मा का कपाल स्वयं ही गिर पड़ा। जिस स्थान पर वह मस्तक गिरा था वह स्थान 'कपाल मोचन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तब से भगवान भैरव काशीपुरी में उसके कोतवाल पद पर अभिषिक्त हुए। क्योंकि ब्रह्मा ने काशी वासियों को दण्ड देने का अधिकार, भैरव को दिया था इसलिए भैरव को 'काशी का कोतवाल' कहा गया।

इस प्रकार श्री भैरवनाथ जी को भगवान सदाशिव का अंशावतार अथवा प्रतिरूप माना जाता है। मार्गशीर्ष (अगहन) मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी उनका जन्मदिन है। इस दिन को कालाष्टमी भी कहा जाता है। जो व्यक्ति इस तिथि को अथवा किसी भी मास की अष्टमी को भगवान का व्रत, स्मरण अथवा पूजन करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो व्यक्ति छः मास तक उक्त तिथियों और दिनों में श्रद्धापूर्वक

भैरव की उपासना करता है उसे सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

भैरव के स्वरूप

श्री भैरव के शरीर का रंग श्याम है। उनकी चार भुजाएँ हैं जिनमें वे त्रिशूल, खड्ग, खप्पर तथा नरमुण्ड धारण करते हैं। अन्य मतानुसार वे एक हाथ में मोर पंखों का चंवर भी धारण करते हैं। उनका वाहन श्वान (कुत्ता) है। उनकी वेशभूषा लगभग शिवजी के समान है। शरीर पर भस्म, मस्तक पर त्रिपुण्ड, बाघम्बर धारण किए, गले में मुण्ड माला और सर्पों से शोभायमान रहते हैं।

भैरव शमशान वासी हैं। ये भूत-प्रेत योगिनियों के अधिपति हैं। भक्तों पर स्नेहवान और दुष्टों का संहार करने में सदैव तत्पर रहते हैं। हर प्रकार के कष्टों को दूर करके बल, बुद्धि, तेज, यश, धन तथा मुक्ति प्रदान करने के कारण इनकी विशेष प्रसिद्धि है।

श्री भैरव के अन्य रूपों में 'महाकाल भैरव' तथा 'बटुक भैरव' मुख्य हैं।

अष्ट भैरव के रूप में जिन आठ नामों की प्रसिद्धि है वे इस प्रकार हैं—

१. अतिसांग भैरव, २. चण्ड भैरव, ३. भयंकर भैरव, ४. क्रोधोन्मत्त भैरव, ५. भीषण भैरव, ६. संहार भैरव, ७. कपाली भैरव, ८. रूरू भैरव।

शिवजी के प्रकारान्तर से निम्न नौ स्वरूप भी भैरव के माने जाते हैं—

१. क्षेत्रपाल, २. दण्डपाणि, ३. नीलकण्ठ, ४. मृत्युञ्जय, ५. मंजुघोष, ६. ईशान, ७. चण्डेश्वर, ८. दक्षिणामूर्ति, ९. अर्द्धनारीश्वर।

भैरव उपासना

जैसा कि पहले बताया जा चुका है भैरव शिवजी के ही प्रतिरूप हैं। वस्तुतः शिवजी और भैरव में कोई अन्तर नहीं है। अतः भैरव की उपासना भी शिवजी की उपासना के समान फल देने वाली है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की उपासना पद्धतियाँ भी अलग-अलग पाई जाती हैं। उनके ध्यान के स्वरूप भी भिन्न-भिन्न हैं। उनकी विस्तृत जानकारी के लिये संबन्धित ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। शिव पुराण, लिंग पुराण तथा अन्य पुराणों में भैरव की लीला एवं उपासना के प्रकारों का विशद् वर्णन है।

नाथ सम्प्रदाय में भैरव पूजा का विशेष स्थान है। भैरव

की पत्नी को भैरवी कहा जाता है। भैरव उपासना में सिन्दूर, लोबान तथा धूप का काफी महत्व है। भैरव के उपासक रुद्राक्ष की माला को गले में धारण करते हैं। भैरव मन्त्र का जप भी रुद्राक्ष की माला पर करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

काशी में महाकाल भैरव का प्रसिद्ध मंदिर है। काशी का ही कपालमोचन तीर्थ समस्त पापों को क्षय करने वाला है। महाकाल भैरव यहाँ पर अपने भक्तों की प्रत्येक मनोभिलाषा पूर्ण करके उसे निष्पाप बनाकर मुक्ति प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति काशीपुरी में श्री भैरव के दर्शन करता है तथा उनकी आराधना में तत्पर रहता है उसके अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

श्री भैरवनाथ की प्रसन्नता के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं होती। ये सामान्य पूजा तथा उपासना से ही सन्तुष्ट होकर अपने भक्तों को मनोवाँछित फल प्रदान करते हैं।

सामान्य पूजा विधि

सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर साफ वस्त्र धारण करके मन, वचन और कर्म की शुद्धि सहित पूर्वाभिमुख बैठें। फिर इष्टदेव श्री भैरव की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर अपने सामने स्थापित कर लें। इस पुस्तक के अन्दर छपे यन्त्र को गेहूँ के आटे, रोली, हल्दी तथा

चावलों के द्वारा देवमूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को काँच के फ्रेम में लगवा लें तो उसे ही बारम्बार प्रयोग में लाया जा सकता है। देव पूजन के साथ ही यन्त्र पूजन करना भी अधिक फलदायी रहता है।

तत्पश्चात इष्टदेव की मूर्ति की समीप शुद्ध घी का दीपक जलाकर धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से वातावरण शुद्ध करें। फिर इस पुस्तक में आगे दी गई स्तुति, स्तोत्र, चालीसा आदि जिसका आप शुद्ध पाठ कर सकें इच्छानुसार नियमित रूप से उसी का उच्चारण करते हुए अन्त में भैरव बाबा की आरती और पुष्पांजलि प्रार्थना करके पूज़न समाप्त करें।

श्री भैरव स्तुति

नमो भैरव भीम भीषण कृपालम्।
नमो चक्रतुण्ड बटुकनाथ दयालम्॥

नमो त्रैलतेराम नमो प्रेतनाथम्।
नमो चन्द्रशेखर दिपै चन्द्रभालम्॥

नमो रुद्र अमरेश नकुलेश स्वामी।
नमो विश्वभूतेश जौमेष व्यालम्॥

दिग्गम्बर अडम्बर नमो ताप मोचन।
त्रिलोचन विमोचन गले मुण्डमालम्॥

नमो क्षेत्रपालं महाकाल कालम्।
नमो भीमलोचन भुजंगी विशालम्॥

नमो चक्रपाणिं करण लम्ब उन्नत।
नमो शिव कपिल विक्राल चालम्॥

नमो सुन्दरानन्द आनन्द कन्दम्।
उमानन्द काशी नमो कोतवालम्॥

नमो अश्वनाथं नमो प्रेतनाथम्।
जगन्नाथ नाथं नमो चक्रनाथम्॥

नमो भूतनाथं नमो बैजनाथम्।
सुवन विश्वनाथं कृपानाथ नाथम्॥

नमो नाथ अतिसाँग क्रोधेश मंजुल।
नमो क्रोधवक्त्रं त्रयम्बक भुजालम्॥

नमो नाथ दशपाणि कृत्यायु बामन।
नमो नाथ अस्तुति करत नत्थलालम्॥

श्री भैरव चालीसा

श्री भैरव संकट हरन, मंगल करन कृपालु।
करहु दया निज दास पै, निशिदिन दीन दयालु॥

जय डमरूधर नयन विशाला। श्यामवर्ण, वपु महाकराला॥
जय त्रिशूलधर जय डमरूधर। काशी कोतवाल संकटहर॥
जय गिरिजासुत परमकृपाला। संकटहरण हरहु भ्रमजाला॥
जयति बटुक भैरव भयहारी। जयति कालभैरव बलधारी॥
अष्ट रूप तुम्हरे सब गाये। सकल एक ते एक सिवाये॥
शिवस्वरूप शिव के अनुगामी। गणाधीश तुम सबके स्वामी॥
जटाजूट पर मुकुट सुहावै। भालचन्द्र अति शोभा पावै॥
कटि करधनी घूँघुरू बाजैं। दर्शन करत सकल भय भाजैं॥
कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर। मोरपंख को चंवर मनोहर॥
खप्पर खड्ग लिये बलवाना। रूप चतुर्भुज नाथ बखाना॥
वाहन श्वान सदा सुखरासी। तुम अनन्त प्रभु तुम अविनासी॥
जय जय जय भैरव भय भंजन। जय कृपालु भक्तन मनरंजन॥
नयन विशाल लाल अति भारी। रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी॥
बं बं बं बोलत दिनराती। शिव कहँ भजहु असुर आराती॥
एक रूप तुम शंभु कहाये। दूजै भैरव रूप बनाये॥

सेवक तुमहिं तुमहिं प्रभु स्वामी। सबजग के तुम अन्तर्यामी॥
रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा। श्याम वर्ण कहुँ होइ प्रचारा॥
श्वेत वर्ण पुनि कहा बखानी। तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी॥
तीनि नयन प्रभु परम सुहावहिं। सुरनरमुनि सब ध्यान लगावहिं॥
व्याघ्रचर्मधर तुम जग स्वामी। प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी॥
चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा। निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा॥
क्रोधवत्स भूतेश कालधर। चक्रतुण्ड दशबाहु व्यालधर॥
अहहिं कोटि प्रभु नाम तुम्हारे। जपत सदा मेटत दुःख भारे॥
चौसठ योगिनी नाचहिं संगा। क्रोधवान तुम अति रणरंगा॥
भूतनाथ तुम परम पुनीता। तुम भविष्य तुम अहहु अतीता॥
वर्तमान तुम्हरो शुचि रूपा। कालजयी तुम परम अनूपा॥
ऐलादी को संकट टारयो। साध भक्त को कारज सारयो॥
कालीपुत्र कहावहु नाथा। तव चरणनु नावहुं नित माथा॥
श्रीक्रोधेश कृपा विस्तारहु। दीन जानि मोहि पार उतारहु॥
भवसागर बूढ़त दिनराती। होहु कृपालु दुष्ट आराती॥
सेवकजानि कृपा प्रभु कीजै। मोहिं भगति अपनी अब दीजै॥
करहुँ सदा भैरव की सेवा। तुम समान दूजो को देवा॥
अश्वनाथ तुम परम मनोहर। दुष्टन कहँ प्रभु अहहु भयंकर॥
तुम्हरो दास जहाँ जो होई। ता कहँ संकट परै न कोई॥
हरहु नाथ तुम जन की पीरा। तुम समान प्रभु को बलवीरा॥

सब अपराध क्षमा करि दीजै। दीन जानि आपुन मोहिं कीजै॥
जो यह पाठ करै चालीसा। तापै कृपा करहु जगदीसा॥

जय भैरव जय भूतपति जय जय जय सुखकन्द।
करहु कृपा नित दास पै, देहु सदा आनन्द॥

॥ इति श्री भैरव चालीसा सम्पूर्णम्॥

श्री बटुक भैरव चालीसा

॥ दोहा॥

विश्वनाथ को सुमिर मन, धर गणेश को ध्यान।
भैरव चालीसा रचूं, कृपा करहु भगवान॥
बटुकनाथ भैरव भजं, श्री काली के लाल।
छीतरमल पर कर कृपा, काशी के कुतवाल॥

जय जय श्रीकाली के लाला। रहो दास पर सदा दयाला॥
भैरव भीषण भीम कपाली। क्रोधवन्त लोचन में लाली॥
कर त्रिशूल है कठिन कराला। गल में प्रभु मुण्डन की माला॥
कृष्ण रूप तन वर्ण विशाला। पीकर मद रहता मतवाला॥
रुद्र बटुक भक्तन के संगी। प्रेत नाथ भूतेश भुजंगी॥
त्रैल तेश है नाम तुम्हारा। चक्र तुण्ड अमरेश पियारा॥
शेखरचंद्र कपाल बिराजे। स्वान सवारी पै प्रभु गाजे॥

शिव नकुलेश चण्ड हो स्वावी। बैजनाथ प्रभु नमो नमामी॥
अश्वनाथ क्रोधेश बखाने। भैरों काल जगत ने जाने॥
गायत्री कहैं निमिष दिगम्बर। जगन्नाथ उन्नत आडम्बर॥
क्षेत्रपाल दसपाण कहाये। मंजुल उमानन्द कहलाये॥
चक्रनाथ भक्तन हितकारी। कहैं त्र्यम्बक सब नर नारी॥
संहारक सुनन्द तव नामा। करहु भक्त के पूरण कामा॥
नाथ पिशाचन के हो प्यारे। संकट मेटहु सकल हमारे॥
कृत्यायू सुन्दर आनन्दा। भक्त जनन के काटहु फन्दा॥
कारण लम्ब आप भय भंजन। नमोनाथ जय जनमन रंजन॥
हो तुम देव त्रिलोचन नाथा। भक्त चरण में नावत माथा॥
त्वं अशतांग रुद्र के लाला। महाकाल कालों के काला॥
ताप विमोचन अरि दल नासा। भाल चन्द्रमा करहि प्रकाशा॥
श्वेत काल अरु लाल शरीरा। मस्तक मुकुट शीश पर चीरा॥
काली के लाला बलधारी। कहाँ तक शोभा कहूँ तुम्हारी॥
शंकर के अवतार कृपाला। रहो चकाचक पी मद प्याला॥
काशी के कुतवाल कहाओ। बटुक नाथ चेटक दिखलाओ॥
रवि के दिन जन भोग लगावें। धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें॥
दरशन करके भक्त सिहावें। दारुड़ा की धार पिलावें॥
मठ में सुन्दर लटकत झावा। सिद्ध कार्य कर भैरों बाबा॥
नाथ आपका यश नहीं थोड़ा। कर में सुभग सुशोभित कोड़ा॥
कटि घूँघरा सुरीले बाजत। कंचनमय सिंहासन राजत॥

नर नारी सब तुमको ध्यावहिं। मनवांछित इच्छाफल पावहिं॥
भोपा हैं आपके पुजारी। करें आरती सेवा भारी॥
भैरव भात आपका गाऊँ। बार बार पद शीश नवाऊँ॥
आपहि वारे छीजन धाये। ऐलादी ने रूदन मचाये॥
बहन त्यागि भाई कहाँ जावे। तो बिन को मोहि भात पिन्हावे॥
रोये बटुक नाथ करुणा कर। गये हिवारे मैं तुम जाकर॥
दुखित भई ऐलादी बाला। तब हर का सिंहासन हाला॥
समय ब्याह का जिस दिन आया। प्रभु ने तुमको तुरत पठाया॥
विष्णु कही मत विलम्ब लगाओ। तीन दिवस को भैरव जाओ॥
दल पठान संग लेकर धाया। ऐलादी को भात पिन्हाया॥
पूरन आस बहन की कीनी। सुर्ख चुन्दरी सिर धर दीनी॥
भात भरा लौटे गुण ग्रामी। नमो नमामी अन्तर्यामी॥

॥ दोहा ॥

जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार।
कृपा दास पर कीजिए, शंकर के अवतार॥
जो यह चालीसा पढ़े, प्रेम सहित सत बार।
उस घर सर्वानन्द हों, वैभव बढ़ें अपार॥

श्री भैरवाष्टक

(सरल काव्यानुवाद)

भैरवनाथ करूँ विनती, शरणागति है अब दास कृपाला।
दयाल रहो अमेरश सदा, नकुलेश पड़ी गल मुण्डनमाला॥
मैं जन दीन मलीन अधीन, दया करिये पीकर मदप्याला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ १॥

शेखर प्रेतहु आप कहावत, भीषण मंजुल नाथ विशाला।
वामन नाथ उजागर है प्रभु, आप उमापति के सुत लाला।
काज करो मम लाज रखो, अरदास करे, जन हे कृतवाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीनदयाला॥ २॥

भीम त्रिलोचन टेर सुनो, अद्यमोचन नाथ कराय निहाला।
संशय दूर करो जन को, तुम होइ दयालु हरो भ्रमजाला।
हे जन-तारन दैत्य-प्रहारण, क्लेश-निवारण हो तुम आला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ ३॥

पीवत धार सदा मद की, प्रभु वाहन स्वान सुहावत काला।
त्रैल त्रयम्बक ताप विमोचन, भाल शशि चमकै निरियाला॥
भूत पिशाचन के वटु मालिक, सारहु कारज लेकर भाला॥
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीनदयाला॥ ४॥

दीनन की तुम टेर सुनो, दसपाण त्रिलोचन ढाल अड़ाला।
शेष महेश सुरेश दिनेश, हमेशा रटें तुमको प्रतिपाला॥
व्याल कराल दया करिहौ, घट अन्दर नाथ करो उजियाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ ५॥

नाशत दैत्यन को पल में, तुम मार पछारत देत कसाला।
मैं मतिमन्द न जानत हूँ, कछु ज्ञान देहु हटा दृगजाला॥
शेखर चन्द्र दया करि दो, वरदान महान बनारस वाला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ ६॥

झांझ मृदंग बजे मठ में, नित गावत गान सुजान निराला।
नाम जपें दिनरात मनावत, आसन बैठ मुनि मृगछाला॥
चौंसठ जोगिन नाचत हैं मठ, झालर शंख बजें खड़ताला॥
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ ७॥

जाहिर हौ तिहुँ लोकन में, अघ टारत आप कृपालु खुशियाला।
ध्यावत हैं जन हार लिये, पहनावत हैं, हरवा हरिमाला॥
छीतर ध्यान धरै तुम्हरो, मम काटहु संकट नाथ कराला।
जानत हैं जग में तुमको, नर-नारि सभी प्रभु दीन दयाला॥ ८॥

श्रीमद् शंकराचार्य विरचित—

श्री काल भैरवाष्टकम्

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रिपंकजं
कालयज्ञ सूत्र मिंदु शेखरं कृपाकरम्।
नारदादि योगी वृन्दवन्दितं दिगंबरं,
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ १॥

भानुकोटिभास्करं भवाब्धितारकंपरं
नीलकंठभीप्सिनार्थदायकं त्रिलोचनम्॥
कालकालमंजुनाक्ष मक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ २॥

शूलटंकपाश दंडपाणिमादि कारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीम विक्रमं प्रभु विचित्र ताण्डवं प्रियं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्त चारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्त लोक विग्रहम्।
विनिक्कणन्मनोज्ञ हेमकिंकिणोलसत्कटि
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभिताङ्ग मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ५॥

रत्नपादुका प्रभाभिराम पादयुग्मक
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करशूलदंश मोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ६॥

अट्टहास भिन्न पद्म जांडकोश संतति
दृष्टिपात नष्टयायजालमुग्र शासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालि कन्धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ७॥

भूतसंघ नायकं विशाल कीर्तिदायकं
काशिवास लोकपुण्य पाप शोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगतपतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ८॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्यवर्द्धनम्।
शोकमोह दैन्यलोभ कोपताय नाशनं
ते प्रयांति कालभैरवांघ्रिसंनिधध्रुवम्॥ ९॥

॥ इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकं समाप्तम्॥

श्री भैरव-स्तवन

करकलित-कपाल : कुण्डलीदण्डपाणि
स्तरुण-तिमिर-निल-व्याल-यज्ञोपवीतो
ऋतु समय-सपर्या विघ्न-विच्छेदहेतुर्जयति
बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।

श्री भैरवाष्टकम्

श्री भैरवो रुद्र महेश्वरो यो महामहाकाल अधीश्वरोऽथ।
यो जीवनाथोऽत्र विराजमानः श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥

पद्मासनासीनमपूर्वरूपं महेन्द्रचर्मोपरि शोभमानम्।
गदाऽब्ज-पाशान्वित-चक्रंचिह्नं श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥

यो रक्त-गौरश्च चतुर्भुजश्च पुरः स्थितोद्भासित पान पात्रः।
भुजंगभूयोऽमित विक्रमो यः श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥

रुद्राक्षमाला-कलिकांग-रूपं त्रिपुण्डयुक्तं शशिभाल शुभ्रम्।
जटाधरं श्वानवरं महान्तं श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥

यो देवदेवोऽस्ति परः पवित्रः भुक्तिश्च मुक्तिं च ददाति नित्यम्।
योऽनन्तरूपः सुखदो जनानां श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये॥

यो बिन्दुनाथोऽखिलनादनाथः श्री भैरवी चक्रप-नागनाथः।
महाद्भूतो भूतपतिः परेशः श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥

ये योगिनो ध्यानपरा नितान्तं स्वान्तः स्थमीशं जगदीश्वरं वै।
पश्यन्ति पारं भवसागरस्य श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥

धर्मध्वजं शंकररूपमेकं शरंण्यमित्थं भुवनेषु सिद्धम्।
'द्विजेन्द्र' पूज्यं विमलं त्रिनेत्रं श्री भैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥

भैरवाष्टकमेतद् यः श्रद्धा-भक्ति-समन्वितः।
सायं-प्रातः पठेन्नित्यं स यशस्वी सुखी भवेत्॥

श्री बटुक भैरव सहस्रनाम स्तोत्रम्

अब भैरवतन्त्र में वर्णित 'श्री बटुक भैरव सहस्रनाम स्तोत्र' का वर्णन किया जाता है। इस स्तोत्र का पाठ करने से किसी विशेष प्रकार के पूजन अथवा न्यास की आवश्यकता नहीं है। केवल पाठ मात्र से ही यह स्तोत्र अभीप्सित फल को देने वाला कहा गया है। इस स्तोत्र के सामान्य न्यास एवं हृदयन्यास के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ईश्वर उवाच—

देवेशि भक्त सुलभे देवनायक वन्दिते।
भक्तानां कार्य सिद्ध्यार्थ निदानं ब्रूहितत्त्वतः॥ १॥
विनैव न्यास जालेन पूजनेन विना भवेत्।
विना कायादि क्लेशेन वित्तव्ययं विनेश्वरि॥ २॥

भावार्थ—ईश्वर ने कहा—हे देवी! अब 'श्री बटुक भैरव सहस्त्रनाम स्तोत्र' का वर्णन करो जो कि न्यास जालों के बिना, पूजनादि के बिना, शरीर को कष्ट दिये बिना तथा धन खर्च कराये बिना ही भक्तों की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

देवी उवाच—

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव सहस्त्रनाम स्तोत्र मन्त्रस्य ब्रह्मानन्द भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप छन्दः, बटुक भैरवो देवता, बं बीजम्, ह्रीं शक्तिः सर्वाभीष्टया सिद्धये जपे विनियोगः।

भावार्थ—देवी ने कहा—इस श्री बटुक भैरव सहस्त्रनाम स्तोत्र मन्त्र के ब्रह्मानन्द भैरव ऋषि हैं, त्रिष्टुप् छन्द है, बटुक भैरव देवता हैं, बं बीज है, ह्रीं शक्ति है तथा समस्त अभीष्टों की सिद्धि में इसके जप का विनियोग है।

करन्यास—

इस स्तोत्र मन्त्र का करन्यास इस प्रकार है—

ॐ ह्रां बां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रू ब्रं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः बः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास—

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करना चाहिए। यथा—

ॐ ह्रां बां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं बीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं बूं शिखाय वषट्।

ॐ हैं बैं कवचाय हुं।

ॐ ह्रौं बौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ह्रः बः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

इस मन्त्र का ध्यान नीचे लिखे अनुसार है—

उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्त्रजं।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः॥
नीलग्रीवमुदार कौस्तुभधरं शीतांशु चूडोज्ज्वलं।
बधूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्॥

भावार्थ—उदीयमान सूर्य के समान कान्ति वाले, तीन नेत्रों वाले, रक्तरागयुक्त, हाथों में कपाल, अभय मुद्रा तथा त्रिशूल को धारण करने वाले, नीलकण्ठ, उदार, कौस्तुभ मंणि को धारण करने वाले, जिनके मस्तक पर उज्जवल चन्द्रमा सुशोभित है, ऐसे बन्धूकपुष्प के समान लालरंग के वस्त्रों को धारण करने वाले, भयहारी श्री बटुक भैरव का मैं निरन्तर ध्यान करता हूँ।

अब श्री बटुक भैरव के सहस्त्रनामों का वर्णन किया जाता है, जो नीचे लिखे अनुसार हैं—

सहस्त्रनाम स्तोत्र प्रारम्भ—

ॐ ह्रीं बटुकः कामदोनाथोऽमाथ प्रिय प्रभाकरः।
भैरवी भीतिहा दर्पः कंदर्पो मीन केतनः॥ १॥

हडो बटुक भूतीशो भूतनाथः प्रजापतिः।
दयालु क्रूर ईशानो जनीशो लोकवल्लभः॥ २॥
देवो दैत्येश्वरो वीरो वीर बंधी दिवाकर।
बलिप्रियः सुरश्रेष्ठः कनिष्ठो नैष्ठिकः शिशुः॥ ३॥
महाबली महातेजा वित्तजो द्युतिवर्द्धनः।
तेजस्वी वीर्यवान्वद्धो विवृद्धो भूतनायकः॥ ४॥
बालकः पालकः कामो विकामः काममर्द्दनः।
कालिकारमणः कालीनायकः कालिकाप्रियः॥ ५॥
कालीशः कालिशकान्त कालिकानन्दवर्धनः।
कालिका हृदयज्ञानी कालिकानतनमो नमः॥ ६॥
खेगशः खेचरः खेटो विशिष्टो खेटक प्रियः।
कुमारः क्रोधिनः कालिप्रियः पर्वतरक्षकः॥ ७॥
गणेज्यो गणयो गूढ़ोगूढप्रायो गणेश्वरः।
गणनाथो गणश्रेष्ठो गणमुख्यो गणप्रियः॥ ८॥
घोरनादो घनश्यामो घनस्वामी घनान्तकः।
चपकाभिश्चिरंजीवो चारुवेषश्चराचरः॥ ९॥
चिंत्योऽचिंत्य गुणो धीमान्सु चित्तस्थश्चित्तीश्वरः।
छत्री छतपतिश्छत्ता छिन्ननासा मनः प्रियः॥१०॥
छिन्नभश्छिन्न संतायश्छद्मीशच्छर्दिनांतकः।
जेता सिस्णुर्जहीशानो जनांनंदो जनेश्वरः॥११॥
जनको जनसंतोषी जयजाप विनाशनः।
सासंधरो जनाराध्यो जनाध्यक्षो जन प्रियः॥१२॥

जीवहा जीवदो जन्तुर्जीवनाथो जलेश्वरः।
जयदो पित्वरो जिह्वो जयश्रीर्जयवर्धन॥१३॥
जयभूमिर्जयकारी जय हे तुर्जयेश्वरः।
अंकारकृत नंतातात्मा झंकार हे तुरात्मभूः॥१४॥
झञ्योश्चरी हरीभर्त्ता विभर्त्ता भृत्यकेश्वरः।
सीत्कार हृदयेयात्मा ठंकेशोठंकनायकः॥१५॥
ठकार मूठरध्वीशो गिरिपृष्ठकुरः पतिः।
ढुँढिर्ढक्काप्रियः पांथो ढुंढिराजो निरंतकः॥१६॥
ताम्रस्तीमश्वस्तोता तीर्थराजस्तडित्प्रभः।
त्रिअक्षस्त्र्यक्षकस्तंभ स्ताक्षकस्तंभठेश्वरः॥१७॥
स्थालस्थः स्थावर स्थाता स्थिरबुद्धिःस्थिरेन्द्रियः।
स्थिरज्ञानी स्थिरप्रीतिः स्थिरस्थिति स्थिराशुभः॥१८॥
दामो दामोदारी दभो दाडिमी कुसुमप्रियः।
दारिद्रयहा दमी दिव्यो दिव्यदेहो दिनप्रभः॥१९॥
दिनकरो दिवानाथो दिवसेशी दिवाकरः।
दीर्घश्रवरोदलज्योतिर्दलेशीदलसुन्दरः॥२०॥
दलप्रियो दलाभासो दलपूज्यो दलप्रभूः।
दलकांतिर्दला:कारो दलसेको दलार्चितः॥२१॥
दीर्घबाहुर्दल श्रेष्ठो दललब्धो दलाकृतिः।
दान वश्यो दयासिन्धुर्दयालुदर्पि वल्लभः॥२२॥
धनेशो धनदोधर्मों धनराजो धनप्रभा।
धनप्रदो धनाध्यक्षो धनमान्यो धनंजयः॥२३॥

धीवरो धातुको धाता ध्रुवो धूमलवर्धनः।
धनिष्ठो धवलच्छभी धन्कामयो धनेश्वरः ॥२४॥
धीरो धीरतरो धेनुधीर्रशो धरणी प्रभुः।
धराधीशो धरानाथो धरनीनायकोधरः ॥२५॥
धराकातो धरापालो धरनीजन वल्लभः।
धराधरो धरो धृष्टो धृतराष्ट्रो धनीश्वरः ॥२६॥
नारदो नीरदो नेता नीतिपूज्यो नीतिप्रियः।
नीतिलभ्योन्नतीशमतो नीतिलब्धो व्रतीश्वरः ॥२७॥
पार्थिवः पार्थ संपूज्यः पार्थदः प्रणतः प्रथुः।
पृथीवीशः पृथासूनः पृथिवीभृत्य ईश्वरः ॥२८॥
पुराणः पारदः पांथः पांचली पावकः प्रभुः।
पूर्वः सुरपतिः श्रेयान्प्रीतिदः प्रीतिवर्द्धनः ॥२९॥
पार्वतीशः परेशानः पार्वतीहृदय प्रियः।
पार्वतीरमणः पूतः पवित्रः पापनाशनः ॥३०॥
पात्री पत्रालि सन्तुष्टः परितुष्टः पुमान्सिय।
पर्वेशः पर्वताधीशः पर्वतोनायकात्मजः ॥३१॥
फाल्गुनस्तु फणानाथः फणीशः फणरक्षकः।
फणीयतिः फणीशानः फणराज फणाकृतिः ॥३२॥
बलभद्रोबली बाली बलधीर्बलवर्द्धनः।
बलप्राणो बलाधीशो बलिदान प्रियकरः ॥३३॥
बलिराणो कलिप्राणो बलिनाथो बलप्रियः।
बलोवरश्च बालेशो बालकः प्रियदर्शनः ॥३४॥

भद्रोभद्रपदोभीमो भीमसेनी भयंकरः।
भवानीशो भवेशानी भवानी नायकीर्भकः ॥३५॥
मकारो माधवो मीनो मनीकेतुर्महेश्वरः।
महेशु मर्दनो मन्मथो मिथुनेशीऽमराविपः ॥३६॥
मरोचिर्मंजुलो मोहो मोहहा मोहमर्दनः।
मोहको मोहनो मेधाप्रियो मोहविनायकः ॥३७॥
महीपतिर्मही मानो महीराजो मनोहरः।
महीश्वरो महीपालो महीनाथो महीप्रियः ॥३८॥
महीधरो महादेवो मनुराजो मनुप्रियः।
मौनी मौनधरो मेघो मन्दारो मत्तिवर्दनः ॥३९॥
मतिदो मन्थरो मन्त्रो मन्त्रीज्ञो मन्त्रनायकः।
मेधावी मानदो मानी मानहा मान मर्दनः ॥४०॥
मीनगो मकराधीशो मधुरी मणिरंजितः।
मणिरभ्यो मणिभ्राता मणिमंडत मंडितः ॥४१॥
मंत्रयो मंत्रदो मुग्धो मोक्षदो मोक्षवल्लभः।
मल्लो मल्लप्रियो मंचो मल्लकोमेलनप्रभुः ॥४२॥
मल्लिको मल्लिकागन्धी मल्लिका कुसुमप्रियः।
मालतीशो मधानाथोऽममूर्तिधेश्वरः ॥४३॥
मुलाभो मूलहामूलो मूलदो मूलमत्सरः।
मणिक्यरोचिः मंमुग्धो मणिकूटो मणिप्रियः ॥४४॥
मुकुन्दो मदनो मंदो मंदवंद्यो मनुप्रभुः।
मनस्थो मेनकाधीशो मेनका प्रियदर्शनः ॥४५॥

यामो यामो यमी देवो यादवो यदुनायकः।
याचको याज्ञिको यज्ञो यज्ञेशो यज्ञवर्द्धन॥४६॥
रमापती रमाधीशो रमेशो राम वल्लभः।
रमापति रमानाथो रमाकान्तो रामेश्वरः॥४७॥
रेवतीरमणो रामो रमेशो रामनन्दनः।
रमामूर्ति रतीशानो राकायानायको रविः॥४८॥
लक्ष्मीधरो ललज्जिह्वो लक्ष्मीबीज जपेरतः।
लंपटो लंबराजेशो लंबोदरो लंकारभूः॥४९॥
वामनो वल्लभोवंद्यो वनमाली वनेश्वरः।
वनस्थो वनगो विंध्यो विंध्यराजो वनाह्वयः॥५०॥
वनेचरो वनाधीशो वनमाला विभूषणः।
वेणुप्रियो वनाकरो वनाराध्यो वनप्रभुः॥५१॥
शंभु शंकर संतुष्ट शंबरारि शरासनः।
शबरीप्रणतः शालः शिलीमुखध्वानिप्रियः॥५२॥
शकुलः शल्कः शीतः शीतरश्मिः सितांशुकः।
शीलदः शीकरः शीलः शीलशाली शनैश्चरः॥५३॥
सिद्ध सिद्धिकरः साध्यः सिद्धिभूः सिद्धिभावनः।
सिद्धान्तवल्लभ सिन्धुः सिन्धुतीर निषेवितः॥५४॥
सिंधुपति सरोघोरः सरसीरुह लोचनः।
सरित्पतिः सरित्संस्थः सरः सिन्धु, सरोवरः॥५५॥
सखाः वीरपतिः सूतः सचेताः सत्पतिः सितः।
सिन्धुराज; सदाभूतः सदाशिव सतांपतिः॥५६।

सदीशः सदनः सूरिः सेव्यमान सतीपतिः।
सूर्यः सूर्यपतिः सेव्यः सेवाप्रिय सनातनः ॥५७॥
सतीशः सरशीनाथः सुतीराजः सतीश्वरः।
सिद्धिराजः सतीदुष्टः सचिवः सव्यवाहनः ॥५८॥
सतीनायक सन्तुष्टः सव्यसाची सुमन्तकः।
सच्चित्तः सर्वसन्तोषी सर्वारामः सुसिद्धदः ॥५९॥
सर्वाराध्यः सचिवाख्यः सतीपति सुसेवितः।
सागरः सगरः सार्थः समुद्रः समुद्रप्रियः ॥६०॥
समुद्रतीरः सन्तुष्टः समुद्रःप्रियदर्शनः।
समद्धीशः सरीनाथः सरसिज विलोचनः ॥६१॥
सरसोजलदाकारः सरसीजलदार्चितः।
सामुद्रिकः समुद्रात्मा साध्यमानः सुरेश्वरः ॥६२॥
सुरेसेव्यः सुरेशानः सुरनाथ सुरार्चितः।
सुराध्यक्षः सुराराध्यः सुरवन्द्य विशारदः ॥६३॥
सुरमुख्यः सुरप्रायः सुरसिंधु निवासवान्।
सुधाप्रियः सुधाधीशः सुधाराध्यः सुधापतिः ॥६४॥
सुधानाथः सुधाभूतः सुधासागरसेवितः।
हारको हीरकोहंता हरिकस्य रुचिः प्रभुः ॥६५॥
हव्यवाही हरिद्राभो हरिद्वार समर्दनः।
हेतुर्हेतुर्हरित्राता हरिनाथो हरिप्रियः ॥६६॥
हरिपूज्यो हरिप्राणी हरिहृष्टो हरीन्द्रकः।
हरीशो हंतृको हीरो हरीनाम परायणः ॥६७॥

हरिमुग्धो हरिभ्यो च हरदासो हरीश्वरः।
हरो हरिपतिर्हारो रोहिणी चित्तहारकः ॥६८॥
हरहितो हरप्राणी हरवाहन शोभनः।
हासो हासप्रियो हूहूर्हुतभग् हुतवाहनः ॥६९॥
हुताशनोहलो हक्को हलाहल हलायुधः।
हलाकारो हलीशानो हलिज्यो च हलिप्रियः ॥७०॥
हरपुत्रो हरोत्साहो हरसूनुर्हरात्मजः।
हरवंद्यो हरधीशो हरांतको हराकृतिः ॥७१॥
हरमान्यो हरांकस्थो हरवैरि विनाशनः।
हरशत्रुर्हरा बार्षोऽहंकारो हरिणी प्रियः ॥७२॥
हाटकेशी हरेशानी हाटक प्रिय दर्शनः।
हाटको हाटकप्राणी हाटकभूषण भूषितः ॥७३॥
हेतिको हंतकी हंसो हंसगतिर्हराह्वयः।
हंसोपतिर्हरोन्मत्तो हंसीशोहरवल्लभः ॥७४॥
हरयुष्प प्रभो हंसीपियो हंस विलासकः।
हरबीजरतोहारी हुरितो हरितांपतिः ॥७५॥
हरित्प्रर्भुर्हरित्पाली हरिरंतरनायकः।
हरिद्दिशो हरित्प्राणो हरिप्रिय प्रियोहरिः ॥७६॥
हेरंबो हुंकृति क्रुब्द्धो हेरंबानन्दिनी हठी।
हेरंबप्राण संहर्ता हेरंब हृदय प्रियः ॥७७॥
क्षमापतिक्षण क्षांतः क्षुरधार क्षितीश्वरः।
क्षितीशः क्षितितः क्षीणः क्षितिपालः क्षितिप्रभुः ॥७८॥

क्षितीशानः क्षितिप्राणः क्षितिनायक सत्प्रियः।
क्षितिराजः क्षणाधीशः क्षणपतिः क्षणेश्वरः ॥७९॥
क्षणप्रिय क्षमानाथः क्षणदानायकः प्रियः।
क्षणिकः क्षणदाधीशः क्षणादाप्राणदः क्षत्रीः ॥८०॥
क्षमः क्षोणिपतिः क्षोभः क्षोभकरी क्षमाप्रियः।
क्षमाशीलः क्षमारूपः क्षमामंडन मंडितः ॥८१॥
क्षमानाथः क्षमाधारः क्षमाकारी क्षमाकरः।
क्षेमः क्षीणरजाः क्षुद्रः क्षुद्रपान विशारदः ॥८२॥
क्षुद्रेशानः क्षमाकारः क्षीरपानकृत्तत्परः।
क्षीरशायी क्षणेशानः क्षीणिभृत्क्षणदोत्सवः ॥८३॥
क्षेमंकरः क्षमालुब्धः क्षमाशास्त्र विशारदः।
क्षमीश्वरः क्षमाकामः क्षमाहृदय मंडनः ॥८४॥
नीलादि सचराशीशो नीलपर्वत सन्निभः।
नीलमणिप्रभारम्यः शषिभूषण भूषितः ॥८५॥
शशधरः शरीभूतो मुण्डमाला विभूषितः।
मुण्डस्थो मुण्ड सन्तुष्टो मुण्डमाला धरीऽनघः ॥८६॥
दिग्वासा विदिगाकारो दिगंबरवरप्रदः।
दिगंबरीश आनन्दो दिगंबर तनूद्भवः ॥८७॥
पिंगलैक जटो धृष्टो डमरूवादन प्रियः।
सृणीकरः सृणीशान खड्गधक् सङ्ग पालकः ॥८८॥
शूलहस्तो मतंगाभी मातंगोत्सव सुन्दरः।
अभयकर ऊर्ध्वंगी लंकापति विनाशनः ॥८९॥

नागाशायो नगेशानो नागमंडन मण्डितः।
नगाकोश नगाधीशो नागशायी नगप्रियः ॥१०॥
घटोत्सवो घटाकारो घंटावाद्य विशारदः।
कपालपाणि रंबेश कपालासनसादनः ॥११॥
पद्यपाणिकपालश्च त्रिनेत्रो नाग वल्लभः।
किंकिनी जाल संतुष्टो जलप्रायो जलाकरः ॥१२॥
अपमृत्युहरो मायामोहमूल विनाशनः।
आयुर्धः कमलानाथः कमलाकांत वल्लभः ॥१३॥
राज्यदो राजराजेशी राजीवपट्ट शोभनः।
डाकिनी नायको नित्यो नित्यधर्मपरायणः ॥१४॥
डाकिनी हृदयज्ञानी डाकिनी देहनाशकः।
डाकिनी प्राणदः शुद्धः शुद्धेयचरितो विभुः ॥१५॥
हेमप्रभो हिमेशानी हिमानी प्रिय दर्शनः।
हेमदो मर्मदो नामी नामधेयो नगात्मजः ॥१६॥
बैकुण्ठो वासुकीप्राणो वासुकीकण्ठभूषणः।
कुण्डलीशो मखध्वंशी मखराजो मखेश्वरः ॥१७॥
मखाकारो मखाधीशो मखमाला विभूषणः।
अंबिका वल्लभो वाणीपर्तिवाणी विशारदः ॥१८॥
वाणीगोः वाच प्राणश्च वचस्थोवचनप्रियः।
देसाधरो दिशामिशो दिङ्नागीहि दिगीश्वरः ॥१९॥
दूर्बाप्रियो दुरासाध्यो दारिद्रय भयभंजनः।
तर्कस्तर्कप्रियस्तक्र्यो वितवर्कस्तर्कबल्लभ ॥१००॥

तर्कसिद्धोति सिद्धात्मा सिद्ध देहो गुहाशयः।
ग्रहगर्भो ग्रहेशानो गंधगंधी विशारदः ॥१०१॥
मंगलो मंगलाकारी मंगलवाद्य वादकः।
मंगलीशो विमानस्थो विमानो नैकनायकः ॥१०२॥
बुधेशो विबुधाशो बुधवरो बुधाकरः।
बुधनाथो बुधप्रीतो बुधपंद्यो बुधाधियः ॥१०३॥
बुधसिंहो बुधप्राणी बुधबुद्धी बुधप्रियः।
सोम प्रभोमनः सिद्धो मनोज प्राणनाशनः ॥१०४॥
सोमेशो मशकाकारो सोमपाः सोमनायकः।
कामगः कामहा बौद्धः कमानाफलदोधियः ॥१०५॥
त्रिदशोदशरत्रेशो दशानन विनाशनः।
लक्षणो लक्ष्य संभर्त्ता लक्ष्य संख्योमनः प्रियः ॥१०६॥
विभावसुर्नलेशानो नायको नगजा प्रियः।
नलकांतिर्नलोत्साहो नरदेवो नराकृतिः ॥१०७॥
नरपतिर्नरेशानो नारायण नरेश्वरः।
अमिलो मारुतोमांमो मांसैक करं सेवितः ॥१०८॥
मरीचिरमरेशानी मागधो मगधप्रभुः।
सुन्दरीसेवकोद्धारी द्वारकेश निवासनः ॥१०९॥
देवकीगर्भ संजातो देवकी सेवकः कुहुः।
वृहस्पतिः कविः शुक्रः शारदा साधक प्रियः ॥११०॥
शारदासाधकः प्राणः शारदासेवकोत्सुकः।
शारदा साधक श्रेष्ठो वीतरागोगजप्रभुः ॥१११॥

मॉँसप्रियो मधुप्राणी मधुमाँस महोत्सव।
मधुपो मधुप श्रेष्ठो मधुपान सदारतिः ॥११२॥
मोदकादान संप्रीतो मोदकामोद मोदितः।
आमदोमोदिते नंदी नंदिकेशो नंदेश्वरः ॥११३॥
नदीप्रियो नदीनाथो नदीतीररु हस्तपाः।
तपनस्तापन ताम्रतापहा तापकारकः ॥११४॥
पतंगी गौमुखो गौरो गोपालो गोपवर्द्धनः।
गोपतिर्गोपसंहर्ता गोवृन्दैक प्रियोतिगः ॥११५॥
गर्विष्ठो गुणरम्यश्च गुणसिंधुर्गुणप्रियः।
गुणपूज्यो गुणायेतो गुणवाद्यो गुणोत्सुकः ॥११६॥
गुणीशः केवलोगमः सुगर्भो गर्भरक्षकः।
गांभीर्यधारको धर्ता विधर्ता धर्मपालकः ॥११७॥
जगदीशो जगन्मित्रो जगत्त्राता जगत्प्रभुः।
जगद्धाता जगद्भोक्ता जगज्जाप्य विनाशनः ॥११८॥
जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जीवन जीवनः।
मालतीपुष्प सुप्रीतो मालती कुसुमोत्सवः ॥११९॥
मालती कुसुमाकारो मालती कुसुमप्रभुः।
रसालजमंरी रस्यो रसगंध निषेवितः ॥१२०॥
रसालमंजरीलुब्धो रसाल तरुवल्लभः।
रसालतरुवासी वै रसालफल सुन्दरः ॥१२१॥
रसालरस सन्तुष्टो रसालरस लालसः।
केतकी दुष्ट सन्तुष्टो केतकीगर्भ संभवः ॥१२२॥

केतकीपत्रसंकाशः केतकी प्राणनाशनः।
गर्त्तस्थो गर्तगंभीरो गर्त्तेशो गर्त्तनायकः ॥१२३॥
गर्त्तगेशोति गर्त्तस्थो गर्त्तक्षीर निवासकः।
गणसेव्यो गणाध्यक्षो गणराजो गणह्वयः॥ १२४।
आनन्दभैरवो भीरुभंरिवेशो सरुर्भंगः।
सुब्रह्मभैरवो वामभैरवो भूतभावनः ॥१२५॥

फलश्रुति

भैरवीतनयो देवीपुत्र पर्वतसंभव भैरवम्।
नाम्नायेत सहस्त्रेण स्तुत्वा बटुकभैरवम्॥१२६॥
लभते ह्यतुलां लक्ष्मीं देवानामपि दुर्लभम्।
उपदेशं गुरोर्लब्ध्वा योगे त्रिमंगलीभवेत्॥१२७॥
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां वासरे भूमि संभवे।
शुक्रेवारवि संक्रांतौ योगोयमुत्तमः प्रभो॥१२८॥
तस्मिन्योगे महेशानि सर्वसिद्धि मवाप्नुयात्।
लक्षमावर्त्तयेन्मंत्रे मंत्रराजं नगेश्वरि॥१२९॥
नित्यकर्मसुसिद्ध्यर्थ तत्फलं लभते ध्रुवम्।
स्तेवमेनं पठेन्मात्रो पाठयन्वा यथाविधिः॥१३०॥
दुर्लभां लभते सिद्धिं सर्वदेव नमस्कृताम्।
न प्रकाशयं च पुत्रेषु भ्रष्टेषु त कदाचन॥१३१॥
अन्यथा सिद्धिरोधः स्पाद्वातुलो वा भवेत्प्रियः।
स्तवस्यास्य प्रसादेन देवनायकवत्प्रियः॥१३२॥

संग्रामे विजयेच्छत्रन्मां तनानिव केसरी।
राजानं वशयेत्सद्यो देवानपि वशं नयेत्॥१३३॥
किंवा परं पलं नाथ स्तवराजस्य कथ्यगम्।
पद्यन्मनसि संकल्प स्तवयेन मुदीरयन्॥१३४॥
तत्तदाप्नोति देवेशं बटुकस्य प्रसादतः।
आपदा हि विनाशाय कारणं कांत दुर्लभम्॥१३५॥
देवासुररणे घोरं देवानामुपकारकम्।
प्रकाशितं मया नाथ तत्रे भैरव दीपके॥१३६॥
अपुत्रो लभते पुत्रं षणमासान्निरतो नरः।
पठित्वा पाठयित्वाऽपि स्तवराज मनुत्तमम्॥१३७॥
दरिद्रोलभते लक्ष्मीभीप्सितामपि निश्चलाम्।
कन्यार्थी लभते कन्यां सर्वरूप समन्विताम्॥१३८॥
प्रदोषे बलिदाने च वशयेदखिलं जगत्।
वटे वा बिल्वमूल वा रंभायां विपिनेपि वा॥१३९॥
जपेत्सतमलक्षं मन्त्रराजस्य सिद्धये।
वर्णलक्षं जपेद्वापि दिङ्मात्रं हि प्रदर्शित्॥१४०॥
पूजयेन तिलैर्माविर्दुग्धैर्मासैर्झषै स्तथा।
घृत नक्कान्नतो वापि जेमनै रस संकुलैः॥१४१॥
पूजयेद्धारयेद्वापि स्तवमेनं सुसाधकः।
पठेद्वापाठयेद्वापि यथाविधि सुरप्रिये॥१४२॥
शत्रु तो न भय तस्य नाग्नि चौरास्त्र वज्रवम्।
ज्वरादि संभवं वाषि सत्यंसत्यं महेश्वर॥१४३॥

भैरवाराधना शक्तो यो भवेत्साधकः प्रभो।
सदाशिवः स विज्ञेयो भैरवेणेति भाषितम्॥१४४॥
श्री मद्भैरवराज सेवन विधौ वैय्यग्रभासेदुषः।
पुंसः पञ्चविद्या भवति नवधा ह्यष्टौ तथा सिद्धयः॥१४५॥
क्षीणीपाल किरीट कोटिमणसन्मालाभरैर्भूयशो।
मौग्ध्यं पादपयो जयोर्विजियते मूर्ध्नि प्रभोश्छत्रताम्॥१४६॥

॥ इति श्री भैरवतन्त्रे श्री बटुकभैरव सहस्रनाम स्तोत्रम् समाप्तम्॥

आपदा उद्धारक बटुक भैरव अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

अब 'रुद्रयामल तन्त्र' में वर्णित 'आपदुद्धारण बटुक भैरव अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र' तथा उसकी न्यास विधि, ध्यान आदि का वर्णन किया जाता है।

वृहदारण्यक उवाच—

ॐ मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
शंकरं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥

भावार्थ—वृहदारण्यक ने कहा—सुमेरु पर्वत पर सुखपूर्वक बैठे हुए देवाधिदेव जगद्गुरु श्री शंकरजी से पार्वती जी ने पूछा।

श्री पार्वती उवाच—

"क एष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्पवित्तमः॥
तस्यनाम सहस्त्राणि अयुसान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषा वै नामाष्टशतकं वद॥
यानि संकीर्तयन्मर्त्यः सर्वेदुःखविवर्जितः।
सर्वान् कामानवाप्नोति साधक सिद्धिमेव च॥"

भावार्थ—हे प्रभु! आपने आपदुद्धारण भैरव के सहस्त्रनामों को कहा। अब आप उनके सारभूत एक सौ आठ नामों का वर्णन करिए, जिनका जप करने मृत्युलोक के सभी प्राणी सब दुःखों से छूटकर, समस्त कामनाओं को प्राप्त कर सकें तथा साधकों को सिद्धि प्राप्त हो।

ईश्वर उवाच—

"श्रणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येदं नामाष्टशतमुत्तमम्॥"

शिवजी बोले—"हे देवी सुनो। मैं तुमसे श्री भैरव के महात्म्य तथा उनके आपदुद्धारण एक सौ आठ नामों का वर्णन करता हूँ।"

विनियोग—

"ॐ अस्य आपदुद्धारण बटुकभैरवनामाष्टकशतकस्य वृहदारण्यकः ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः श्री बटुकभैरवो देवता, बं बीजं ह्रीं शक्तिः ममसकलापदुद्धारणे पाठे विनियोगेः॥"

भावार्थः—इस आपदुद्धारण बटुकभैरव नामाष्टकशतक के वृहदारण्यक ऋषि हैं, अनुष्टुप्छन्द है, श्री बटुकभैरव देवता हैं, बं बीज है, ह्रीं शक्ति है और समस्त विपत्तियों से उद्धार पाने में इसके पाठ का विनियोग है।

ऋष्यादिन्यासः—

इसका ऋष्यादिन्यास नीचे लिखे अनुसार है—

वृहदारण्यक ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
श्री बटुकभैरव देवतायै नमः हृदि।
बं बीजाय नमः गुह्यै।
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ।
मम सकलापदुद्धारणेपाठे विनियोगाय नमःसर्वाङ्गे।

करन्यास—

इसका करन्यास नीचे लिखे अनुसार है—

ह्रां वां ईशानाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ह्रीं वीं तत्पुरुषाय तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रूं वूं अघोराय मध्यमाभ्यां नमः।
ह्रैं वैं वामदेवाय अनामिकाभ्यां नमः।
ह्रौं वौं सद्योजाताय कनिष्ठाभ्यां नमः।

विशेष—कुछ लोग करन्यास के बाद '**पञ्चाङ्गन्यास**'

तथा '**पञ्चवक्त्रन्यास**'—ये दो न्यास और भी करते हैं, इनकी विधि निम्नानुसार समझनी चाहिए—

पंचाङ्गन्यास—

ह्रीं वों ईशानाय नमः शिरसि।
ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः मुखे।
ह्रुं वुं अघोराय नमः हृदि।
ह्रिं विं वामदेवाय नमः गुह्ये।
ह्रं वं सद्योजाताय नमः चरणयोः॥

पंचवक्त्रन्यास—

ह्रों वों ईशानाय नमः उर्ध्वमुखे।
ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः पूर्व मुखे।
ह्रुं वुं अघोराय नमः दक्षिण मुखे।
ह्रिं विं वामदेवाय नमः पश्चिम मुखे।
ह्रं वं सद्योजाताय नमः उत्तर मुखे।

षडङ्न्यास—

ह्रां वां हृदयाय नमः। ह्रीं वीं शिरसे स्वाहाः।
ह्रं वूं शिखायै वषट्। ह्रैं वैं कवचाय ह्रं।
ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

इसके सात्विक–ध्यान का मन्त्र नीचे लिखे अनुसार है—

वन्दे बालं स्फटिक सदृशं कुन्तलोल्लासिवक्त्रं।
दिव्याकल्पैर्नवमणियैः किङ्किणी नूपुराद्यैः॥
दीप्ताकरं विशदवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकसदृशं शूलदण्डौदधानम्॥

अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र प्रारम्भ—

श्री आपदुद्धारण बटुकभैरव के अष्टोत्तरशतनाम नीचे लिखे अनुसार हैं—

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञ क्षेत्रफलश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥ १॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरांतकृत्।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः॥ २॥
कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गल लोचनः॥ ३॥
शूलपाणिः खड्गपाणि कंकाली धूम्रलोचनः।
अभीयुर्भैरवीनाथो भूतयो योगिनीपतिः॥ ४॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभागवान्।
नागहारो नागकेशो व्योमकेशः कपालभृत्॥ ५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिनेत्रो च ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकभृत॥ ६॥
त्रिवृत्तत्तनयो डिम्भः शान्तः शान्त जनप्रियः।
बटुको बटुवेषश्च खट्वाङ्गवरः॥ ७॥

भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥ ८॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शंकरप्रिय बान्धवः।
अष्टमूर्ति निधीशश्च ज्ञानचक्षु स्तपोमयः॥ ९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखः।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥१०॥
कपालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतवान्।
जृझाणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥११॥
शुद्धनीलाञ्जनप्ररुय देह मुण्ड विभूषणः।
बलिभुग्बलि भुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः॥१२॥
सर्वपद्धारणा दुर्गो दुष्टभूत निषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनावशकृद्वशीः॥१३॥
सर्वासिद्धिप्रदो वैद्धः प्रभुर्विष्णुरितीव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः॥१४॥

फलश्रुतिः

मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्।
य इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥१५॥
न तस्य दुरितं किंचिन्न च भूतभयस्तथा।
न शत्रुभ्यो भयं किंचित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचिद्॥१६॥
पातकेभ्यो भयं नैव पठेत्स्तोत्रमतः सुधीः।
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये॥१७॥

औत्पातिके भये चैव तथा दुःखस्वप्नजे भये।
बन्धने च महाघोरे पठेत्स्तोत्र मनन्यधीः ॥१८॥
सर्व प्रशममायति भयं भैरवकीर्त्तनात्।
एकादश सहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते ॥१९॥
यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्स्तोत्रं संवत्सरमतन्द्रितः।
स सिद्धि प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवः ॥२०॥
षणमासाद्भूमिकामस्तु पठित्वा लभते महीम्।
निजशत्रु विनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं यदि ॥२१॥
रात्रौ वारत्रयं चैव नाशयेच्चैव शात्रवान्।
जपेन्मासत्रयं मर्त्यो राजानां वशमानेयतः ॥२२॥
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी यश्च मानवः।
जपेन्मासत्रयं देवि वारमेकं महानिशि ॥२३॥
धनपुत्रास्तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशय।
रोगोरोगात्प्रमुच्येत बद्धोमुच्येत बद्धनात् ॥२४॥
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः।
यं यं कामयते कामं पठे स्तोत्र मनुत्तमम् ॥२५॥
तं तं काममवाप्नोति सिद्धिवान्नात्र संशयः।
निगडैश्चापि बद्धो यः कारागृह निपातितः ॥२६॥
शृंखलाबन्धनं प्राप्तं पठेच्चेद दिवानिशम्।
अप्रकाश्यं परं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥२७॥
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भ वर्जिते।
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकाम फलप्रदम् ॥२८॥

॥ इति श्री रुद्रयामले श्री आपदुद्धार बटुकभैरवस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्री भैरव के 108 नाम

श्री बटुकभैरवाष्टोत्तर शतनामावली

"ॐ अस्य श्री बटुकभैरवाष्टोत्तरशतनाम मन्त्रस्य वृहदारण्यक ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री बटुकभैरवो देवता। बं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। प्रणवः कीलकम्। श्री बटुकभैरव प्रीत्यर्थम् एभिर्द्रव्यैः पृथङ्नाम मंत्रेण हवने विनियोगः।"

तत्रोदौ ह्रां बां इति करन्यासं हृदयादि न्यासं च कृत्वा ध्यात्वा पधाक्षतः संपूज्य हवनं कुर्यात्।

१. ॐ भैरवाय नमः। २. ॐ भूतनाथाय नमः। ३. ॐ भूतात्मने नमः। ४. ॐ भूतभावनाय नमः। ५. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः। ६. ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ७. ॐ क्षेत्रदाय नमः। ८. ॐ क्षत्रियाय नमः। ९. ॐ विराजे नमः। १०. ॐ श्मशान वासिने नमः। ११. ॐ मांसाशिने नमः। १२. ॐ खर्वनाशिने नमः। १३. ॐ स्मरांतकाय नमः। १४. ॐ रक्तपाय नमः। १५. ॐ पानयाय नमः। १६. ॐ सिद्धाय नमः। १७. ॐ सिद्धिदाय नमः। १८. ॐ सिद्धिसेविताय नमः। १९. ॐ कंकालाय नमः। २०. ॐ कालशमनाय नमः। २१. ॐ कलाकाष्ठाय नमः। २२. ॐ तनये नमः। २३. ॐ कवये नमः। २४. ॐ त्रिनेत्राय नमः। २५. ॐ

बहुनेत्राय नमः। २६. ओम पिंगल लोचनाय नमः। २७. ओम शूलपाणये नमः। २८. ॐ खगपाणये नमः। २९. ॐ कपालिने नमः। ३०. ॐ धूम्र लोचनाय नमः। ३१. ॐ अभीरवे नमः। ३२. ओम भैरवी नाथाय नमः। ३३. ओम भूतपाय नमः। ३४. ओम योगिनीपतये नमः। ३५. ॐ धनदाय नमः। ३६. ॐ धनहारिणे नमः। ३७. ॐ धनवते नमः। ३८. ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः। ३९. ॐ नागहाराय नमः। ४०. ॐ नागपाशाय नमः। ४१. ॐ व्योमकेशाय नमः। ४२. ॐ कपालभृत्ते नमः। ४३. ॐ कालाय नमः। ४४. ॐ कपालमालिने नमः। ४५. ॐ कमनीयाय नमः। ४६. ॐ कलानिधये नमः। ४७. ॐ त्रिलोचनाय नमः। ४८. ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः। ४९. ॐ त्रिशिखिने नमः। ५०. ॐ त्रिलोकषाय नमः। ५१. ॐ तिनेत्रतनयाय नमः। ५२. ॐ डिंभाय नमः। ५३. ॐ शान्ताय नमः। ५४. ॐ शान्तजनप्रियाय नमः। ५५. ॐ बटुकाय नमः। ५६. ॐ बटुकेशाय नमः। ५७. ॐ खट्वांगधारकाय नमः। ५८. ॐ धनाध्यक्षाय नमः। ५९. ॐ पशुपतये नमः। ६०. ॐ भिक्षकाय नमः। ६१. ॐ परिचारकाय नमः। ६२. ॐ धूर्ताय नमः। ६३. ॐ दिगम्बराय नमः। ६४. ॐ शूराय नमः। ६५. ॐ हरिणे नमः। ६६. ॐ पांडुलीचनाय नमः। ६७. ॐ प्रशांताय नमः। ६८. ॐ शांतिदाय नमः। ६९. ॐ सिद्धाय नमः।

७०. ॐ शंकर प्रियबांधवाय नमः। ७१. ॐ अष्टमूर्तये नमः। ७२. ॐ निधीशाय नमः। ७३. ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः। ७४. ॐ तमोमयाय नमः। ७५. ॐ अष्टाधाराय नमः। ७६. ॐ षडाधाराय नमः। ७७. ॐ सर्पयुक्ताय नमः। ७८. ॐ शिखिसखाय नमः। ७९. ॐ भूधराय नमः। ८०. ॐ भूधराधीशाय नमः। ८१. ॐ भूपतये नमः। ८२. ॐ भूधरात्मजाय नमः। ८३. ॐ कंकालधारिणे नमः। ८४. ॐ मुण्डिने नमः। ८५. ॐ नागयज्ञोपवीतवते नमः। ८६. ॐ जृम्भणाय नमः। ८७. ॐ मोहनाय नमः। ८८. ॐ स्तंभिने नमः। ८९. ॐ मरणाय नमः। ९०. ॐ क्षोभणाय नमः। ९१. ॐ शुद्धनीलांजनप्रख्याय नमः। ९२. ॐ दैत्यघ्ने नमः। ९३. ॐ मुण्डभूषिताय नमः। ९४. ॐ बलिभुजे नमः। ९५. ॐ बलिभुङ्नाथाय नमः। ९६. ॐ बालाय नमः। ९७. ॐ बालपराक्रमाय नमः। ९८. ॐ सर्वापत्तारणाय नमः। ९९. ॐ दुर्गाय नमः। १००. ॐ दुष्टभूतनिषेविताय नमः। १०१. ॐ कामिने नमः। १०२. ॐ कलानिधये नमः। १०३. ॐ कांताय नमः। १०४. ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः। १०५. सर्वसिद्धिप्रदाय नमः। १०६. वैद्याय नमः। १०७. प्रभवे नमः। १०८. विष्णवे नमः।

॥ इति श्री बटुकभैरवाष्टोत्तर शतनामावली समाप्तम् ॥

श्री भैरव अपराध क्षमापन स्तोत्रम्

गुरो सेवां त्यक्त्वा गुरुवचन शक्तोपि न भवे।
भवत्पूजाध्यानाज्जयहवन यागाद्विरहितः।
त्वदर्च्चानिर्माणे क्वचिदपि न यत्नं च कृत-
वाञ्जगज्जालग्रस्तो झटिति कुरुहार्द मयि विभो॥ १॥

प्रभोदुर्गासूनो तव शरणगतां सोधिगतवा-
न्कृपाले दुःखार्तः कमपि भवदन्यं प्रकथये।
सुहृत्सम्पत्तेहं सरलविरलः साधकजन।
स्त्वदन्यः कस्त्राता भवदहनवाहं शमयति ॥ २॥

वदोन्यो मान्यस्त्वं विविधजन पालो भवसि वै
दयालुर्दीनार्तान्भव जलधिपारं गम यसि
अतस्त्वत्तो याचे नतिनियमतोऽचिञ्चन धनः।
सदाभूयाद्भावः पदनलिन योस्ते तिमिरहा॥ ३॥

अजापूर्वो विप्रो मिलपदपरो योति पतितो।
महामूर्खो दुष्टो वृजिन निरतः पामरननृपः॥
असत्यानासक्तो यवनयुवती व्रातरमणः।
प्रभावात्त्वन्ननाम्नः परमपदवीं सोप्यधिगतः ॥ ४॥

दयां दीर्घां दीने बटुक कुरु विश्वम्भरमयि
न चान्यस्सन्त्राता परमशिव मां पालय विभो।
महोश्चर्य्य प्राप्तस्त्तव सरलदृष्ट्या विरहित।
कृपापूर्णैर्नेत्रै कमलदलनिभैर्मा खचयतात्॥ ५॥

सहस्ये किं हंसो नहि तपति दीनं जनचयं
घनान्ते किं चन्द्रोऽसमकर नियातो भुवितले।
कृपादृष्टेस्तेऽहं भयहरविभो किं विरहितो
जले वा हर्म्ये वा घनरसमु यातो न विषमः॥ ६॥

त्रिमूर्तिस्त्वं गीतो हरिहरविधातात्मकगुणो
निराकारः शुद्ध परतरपरः गोप्य विषयः।
दयारूपं शान्त मुनिगणनुतं भक्त दयितं
कदा पश्यामि त्वां कुटिलकच शोभित्रियनम्॥ ७॥

तपो योगं सांख्यं यमनियम चेतः प्रयजनं
न कोलार्च्याचक्रं हरिहर विधीनां प्रियतमम्।
न जाने ते भक्तिं परम मुनिमार्ग मधुविधि
तथाप्येषा वाणी परिरटति नित्यं तव यशः
न ये काङ्क्षा धर्मे न वसुनिचये राज्य निवहे
न मे स्त्रीणा भोगे सखिसुतकुटुम्बेषु न च मे।
यदा यद्यद्भाव्यं भवतु भगवन् पूर्वसुकृता-
न्ममैतत्तु प्रार्थ्यं तव विमलभक्तिः प्रभवतात्॥ ८॥

क्रियांस्तेऽस्मद्धारः पतितपतितंस्तारयसि भो
मदन्यः कः पापी यजनविमुख पाठरहितः।

दृढो में विश्वासस्तव नियतिरुद्धार विषया
सदा स्याद्विश्रम्भः क्वचिदपि मृषामा च भवतात्॥ ९॥

भवद्भावाद्भिन्नो व्यसन निरतः को मदपरो
मदान्धः पापात्मा बटुक शिव ते नामरहितः।
उदारात्मन्बन्धो नहि तवक तुल्यः कलुषहा
पुनस्सञ्चिन्त्यैवं कुरु हृदि यथा चेच्छसि तथा॥१०॥

जपान्ते स्नानान्ते हृषसिं च निशीथे पठतियो
महासौख्यं देवो वितरति नु तस्मै प्रमुदितः।
अहोरात्रं पार्श्वे परिवसति भक्तानुगमनो
वयान्ते सहृष्टः परिनयति भक्तान्स्वभुवनम् ॥११॥

श्री बटुक भैरव उपासना

श्री बटुक भैरव की उपासना के मन्त्र, पूजन, यन्त्र तथा उपासना की विधि को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बटुक भैरव मन्त्र

१. ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।
२. ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

पहला मन्त्र इक्कीस अक्षर का तथा दूसरा प्रणव (ॐ) युक्त मन्त्र बाईस अक्षर का है। इन्हीं दोनों में से किसी भी एक

मन्त्र द्वारा बटुक भैरव की उपासना की जाती है।

भैरव पूजा विधि

सर्वप्रथम सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्यादि से प्राणायाम पर्यन्त सभी कार्य करके अग्नि कोण में—

ॐ धर्माय नमः।

निर्ऋति, वायव्य तथा ईशान कोण में—

ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः।

तथा पूर्वादि चारों दिशाओं में—

ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः।

तक '**पीठन्यास**' करना चाहिए। तत्पश्चात् नीचे लिखे अनुसार ऋष्यादि न्यास करना चाहिए।

ऋष्यादिन्यास—

ॐ शिरसि वृहदारण्यक ऋषये नमः।
मुखे गायत्री छन्दसे नमः।
हृदि बटुकभैरवाय देवतायै नमः।

ऋष्यादिन्यास के उपरान्त नीचे लिखे अनुसार मूर्तिन्यास करना चाहिए—

मूर्तिन्यास—

ह्रों वों ईशानाय नमः अंगुष्ठाभ्यां। ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः। ह्रुं वुं अघोराय नमः मध्यमयोः। ह्रिं विं वामदेवाय नमः अनामिकयोः। ह्रं वं सद्योजाताय नमः कनिष्ठयोः।

इसके पश्चात् अंगूठे से मस्तक में—**ह्रों वों ईशानाय नमः।**
अनामिका से मुख में—**ह्रें वें तत्पुरुषाय नमः।**
मध्यमा से हृदय में—**ह्रुं वुं अघोराय नमः।**
अनामिका से गुह्य में—**ह्रिं विं वामदेवाय नमः।**
तथा कनिष्ठा से पाँवों में—**ह्रं वं सद्योजाताय नमः।**
से न्यास करना चाहिए।

इसी क्रम से ऊर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर तथा पश्चिम मुखों में भी पुनः उक्त मन्त्रों से न्यास करना चाहिए।

इसके पश्चात् आगे लिखे अनुसार अंगन्यास करना चाहिए।

अंगन्यास—

ॐ ह्रां वां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां हुं।
ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्।
ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

इसके पश्चात नीचे लिखे अनुसार हृदयादि न्यास करना चाहिए।

हृदयादिन्यास—

ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

श्री भैरव ध्यानम्

श्री बटुक भैरव के ध्यान तीन प्रकार के हैं—(१) **सात्विक**, (२) **राजसिक**, (३) **तामसिक**।
तीनों प्रकार के ध्यानों को नीचे अलग-अलग लिखा जा रहा है।

सात्विक ध्यान—

वन्दे बालं स्फटिक सदृशं कुण्डलोद्भासितांगम्।
दिव्याकल्पैर्नवमिणिमयैः किङ्किणो नूपुराद्यैः।
दीप्ताकांर विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रे।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलदण्डौ दधानम्॥

भावार्थ—भैरव का बाल स्वरूप स्फटिक के समान कान्तिमान शरीर, कुण्डलों से दैदीप्यमान मुख, दिव्य नवीन मणिजटित किंकिणी, पायजेबादि से सुशोभित, निर्मल वस्त्र, प्रसन्नचित्त एवं त्रिनयन है। वे अपने हाथों में शूल तथा दण्ड को धारण किये हुए हैं।

राजसिक ध्यान—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्त्रजं।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।
नीलग्रीवमुदार भूषणयुतं शीतांशुचूडोज्जवलं।
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्॥

भावार्थ—भैरव के शरीर की प्रभा उदीयमान सूर्य के समान है। वे त्रिनयन, रक्तांगराग, रक्तमालाधारी तथा स्मित-मुख हैं। उनके हाथों में वर-मुद्रा, नर-कपाल, अभय-मुद्रा एवं शूल है। वे साधकों का भय हरण करने वाले हैं। उनकी ग्रीवा नीलवर्ण है, जो अनेक आभूषणों से विभूषित है। उनके चूड़ा में चन्द्रमा है। वे बन्धूक पुष्प के समान अरुण वस्त्रों को धारण किये हुए हैं।

तामसिक ध्यान—

ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तम् शशिकलाधरं मुण्डमालं महेशं।
दिग्वस्त्रं पिङ्गलाक्षं डमरुमथ सृणिं खड्गशूलाभयानि।
नागं घण्टां कपालं कर सरसिरुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं।
सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत्किङ्किणी नूपुराढ्यम्॥

भावार्थ—भैरव के शरीर की कान्ति नील-पर्वत के समान है। वे चन्द्रकला तथा मोतियों की माला को धारण करने वाले, दिगम्बर तथा पिंगल वर्ण नेत्रों वाले हैं। उन्होंने अपने हाथों में डमरू, अंकुश, खड्ग, शूल, अभयमुद्रा, सर्प, घंटा तथा नरमुण्ड को धारण कर रखा है। उनकी दंतपंक्ति भयानक है, वे तीन नेत्रों वाले हैं तथा मणिमय किंकिणी, नूपुरादि आभूषणों से अलंकृत हैं।

ध्यान का फल—उक्त तीनों तरह के ध्यान का अलग-अलग फल इस प्रकार बताया गया है—

(१) सात्विक ध्यान से अकाल मृत्यु का नाश, आयु की वृद्धि, आरोग्य एवं मुक्ति-पद की प्राप्ति होती है।

(२) राजसिक ध्यान से धर्म की वृद्धि, कामनाओं की पूर्ति तथा धन की प्राप्ति होती है।

(३) तामसिक ध्यान से शत्रुकृत् कृत्यादि दोष एवं भूतावेश-जनित रोगों का नाश होता है।

अस्तु, साधक को चाहिए कि वह अपनी कामनासुसार पूर्वोक्त प्रकार में से भैरव के किसी भी स्वरूप का ध्यान करने के पश्चात् मानस-पूजा एवं अर्घ्य-स्थापन के कृत्य करे।

यन्त्र लेखनोपरान्त मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करे, पुनः ध्यान करके आवाहनादि कृत्य करने चाहिएँ।

मूलमन्त्र के पाठ के पश्चात् सद्योजात मन्त्र का पाठ करके स्थापन, मूलमन्त्र से सन्निधीकरण, अघोर मन्त्र से सन्निरोधन,

आवाहन, मूलमंत्रपूर्वक वामदेव मंत्र का पाठ करके तत्पुरुष मन्त्र से योनिमुद्रा का प्रदर्शन तथा ईशान मन्त्र से वन्दना करनी चाहिए।

इन मन्त्रों को किसी मन्त्रशास्त्री से ज्ञात कर लेना चाहिए अथवा ऐतद्विषयक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। इसके पश्चात् पूजादि से पंच, पुष्पांजलि दान तक के कर्म करके नीचे लिखे अनुसार आवरण-पूजा करनी चाहिए—

आवरण पूजा—

कर्णिका की चारों दिशाओं तथा चार कोनों में—

ॐ ईशानाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ सद्योजाताय नमः। ॐ वामदेवाय नमः।

इन मन्त्रों द्वारा पूजन से प्रथम आवरण की पूजा करे। फिर पद्मदलों में—

ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ कपाल भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

इन अष्ट भैरवों के पूजन से द्वितीय आवरण की पूजा करे। फिर पद्म के भीतर षट्कोण में—

ॐ ह्रं वां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं

वूं शिखायै वषट्। ॐ हैं वैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार षडङ्गपूजन तथा पूर्वादि क्रम से ईशान कोण तक—

ॐ डाकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ राकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ लाकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ काकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ साकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ हाकिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ मालिनी पुत्रेभ्यः नमः। ॐ देवी पुत्रेभ्यः नमः।

इन मन्त्रों के पूजन से तृतीय आवरण की पूजा करे। फिर आठ दिशाओं में—

ॐ उमापुत्रेभ्यो नमः। ॐ रुद्रपुत्रेभ्यो नमः। ॐ मातृपुत्रेभ्यो नमः।

इन मन्त्रों के पूजन तथा ऊर्ध्व दिशा में—**ॐ ऊर्ध्वमुखी पुत्रेभ्यो नमः।** तथा अधो दिशा में—**ॐ अधोमुखी पुत्रेभ्यो नमः।**

इन मन्त्रों के पूजन से चतुर्थ आवरण की पूजा करे। फिर उसके बाहर—

बटुकरूपेभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः।

इस मन्त्र से अष्ट-दिक्पालों का पूजन करके उसके बाहर—

पूर्वकोणे ब्रह्माणीपुत्राय नमः। ईशाने माहेश्वरी पुत्राय नमः। उत्तरे वैष्णवी पुत्राय नमः। वायुकोणे कौमारी पुत्राय

नमः। पश्चिमे इन्द्राणी पुत्राय नमः। नैर्ऋते महालक्ष्मी पुत्राय नमः। दक्षिणाये वाराही पुत्राय नमः। अग्निकोणे चामुण्डा पुत्राय नमः।

इन मन्त्रों के पूजन से पंचम आवरण की पूजा करे। फिर उसके बाहर दस दिशाओं में—

ॐ हेतुकाय नमः। ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः। ॐ वह्निजिह्वाय नमः। ॐ कालान्तकाय नमः। ॐ कपालाय नमः। ॐ एकपादाय नमः। ॐ भीमरूपाय नमः। ॐ अचलाय नमः। ॐ हाटकेश्वराय नमः।

इन मन्त्रों से षष्ठम् आवरण की पूजा करे। फिर ईशान, अग्नि तथा नैर्ऋत कोण में—

योगिनी सहित दिव्ययोगीशाय नमः। योगिनी सहितान्तारी- क्षयोगीशाय नमः। योगिनी सहितभूमिष्ठ योगीशाय नमः। के पूजन से सप्तम आवरण की पूजा समाप्त करे।

पुरश्चरण—इस मन्त्र में पुरुश्चरण में हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर इक्कीस लाख की संख्या में जप करके जप का दशाँश घृत, मधु, शर्करा मिश्रित तिल से होम करना चाहिए।

बलि-विधान—सर्वप्रथम गणेश तथा दुर्गा की पूजा करके बलिदान करे। शालिधान्य का अन्न, माँस, घृत, लाजा चूर्ण, शर्करा, गुड़, ईख का रस, पिष्टक तथा मधु—इन सबको एकत्र

कर पिण्ड बनाकर रात्रि के समय रक्त-चन्दन तथा रक्त-पुष्प के साथ बलि निवेदित करनी चाहिए। माँस के स्थान पर खीर का प्रयोग भी किया जा सकता है। अथवा एक सर्वाङ्ग सुन्दर छाग की बलि देनी चाहिए।

बलि-मन्त्र—बलि प्रदान करते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने।
भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेय समन्वितः।

बलि प्रदान करते समय बुद्धिमान साधक को चाहिए कि वह शत्रुगण की सैन्य आदि को भी बलिरूप में निवेदित कर दे। ऐसा करते समय बलि-मन्त्र में शत्रु का नामोल्लेख करते हुए बलि-प्रदान करनी चाहिए। इससे बटुकदेव प्रसन्न होकर साधक के शत्रुओं का नाश कर देते हैं।

भैरव पूजन यन्त्र जप तथा होम

पूजन का यन्त्र—

ध्यानोपरान्त सिन्दूर का चौका देकर उसमें एक त्रिकोण में चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करे—
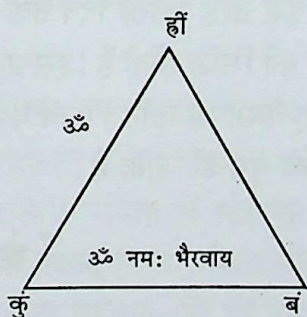
उक्त यन्त्र में जिस स्थान पर 'ह्रीं' लिखा है, वहाँ दीपक रखकर, संकल्प, न्यास, ध्यान, आवाहनादि द्वारा भैरव का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए।

जप तथा होम की विधि—पूजनोपरान्त यन्त्र के समीप तेल के पके हुए उड़द के बड़े रखकर उनके समीप ही दही तथा गुड़ रखे, थोड़ी-सी सामग्री अछूती अलग रख दे। भोग में बड़े, दही तथा गुड़ को मिलाकर रखना चाहिए।

भैरव के भोग में निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ कही गई हैं—

(१) तेल में पके हुए उड़द के बड़े, (२) दही, (३) गुड़, (४) मद्य (शराब) तथा (५) (अग्नि में भुनी हुई छोटी मछली)।

पूर्वोक्त विधि से भोग आदि रखकर एक सहस्र की संख्या में मन्त्र का जप करना चाहिए। तत्पश्चात् जप का दशांश अर्थात् एक सौ की संख्या में घृत और शहद की आहुतियाँ देकर होम करना चाहिए।

इस तरह ग्यारह दिन तक जप, पूजन एवं होम करने से भैरव की सिद्धि होती है। इस प्रकार के तीन प्रयोग कर लेने के पश्चात् कैसा भी कठिन कार्य क्यों न हो, भैरव की कृपा से वह अवश्य पूरा हो जाता है।

भैरव साधना के मन्त्र

यहाँ पर भैरव-साधना की लोक-प्रचलित प्रणालियों, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र आदि का वर्णन किया जाता है। इन प्रयोगों का प्राचीन शास्त्रों अथवा तन्त्र ग्रंथों में कोई उल्लेख नहीं है, परन्तु ये प्रणालियाँ लोक में अत्यधिक प्रचलित हैं। अस्तु, पाठकों की जानकारी के लिए ही इन्हें यहाँ संकलित किया गया है। इन प्रणालियों के सत्यासत्य के विषय में पाठकों स्वयं निर्णय करना चाहिए। इन मन्त्रों का स्वरूप और शब्द शैली शाबर मन्त्रों के अनुरूप है अतः कई पाठक इन्हें भैरव शाबर मन्त्र भी कहते हैं।

भैरव साधना मन्त्र (१)

ॐ नमो काल गौराक्षेत्रपाल बामं हाथं कान्ति जीवन हाथ कृपाल ॐ गंती सूरजथंभ प्रातःसायं रथभंजलतो विसाररारथंभ कुसीचाल पाषान चाल शिला चाल हो चाली न चाले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिये चोखा मंत्र ऐसाकुनी अबनारहसही।

यह मंत्र एक लाख जपने तथा जप का दशांश होम करने से सिद्ध होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल पवित्र होकर यथाविधि पूजनादि करने के पश्चात् यथाशक्ति संख्या में मंत्र का जप करना चाहिए। प्रतिदिन जप के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए नमस्कार करना चाहिए—**ह्रीं ह्रों नमः।**

इस प्रकार साधन करने से श्री भैरव सिद्ध हो जाते हैं और वे साधक की प्रत्येक अभिलाषा पूर्ण करते हैं।

भैरव साधना मन्त्र (२)

भैरव-साधना का दूसरा लोकप्रचलित मंत्र इस प्रकार है—

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे मेरा भेजा काल करै, भेजा रक्षा करै, आनबाँधूं बानबाँधूं, चलते फूल में जाय कोठे जी पड़े, थर थर कांपै, हल हल हलै, गिरि गिरि परै, उठ उठ भगै, बक बक बकै, मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन, सवा मास, सवा बरस को बावला न करौ तौ माता काली की शैया पै पगधरैं। वाचा चूकै तौ ऊमा सूखें, वाचा छोड़ कुवाचा करै, धोबी की नाद चमार के कूंडे में परै, मेरा भेजा बावला न करै तौ रुद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कढै, सिर की लटा टूट भूमि में गिरै, माता पार्वती के चीर पै चोट पड़ै, बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरव। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को कालरात्रि अथवा सूर्यग्रहण की रात्रि में सिद्ध करना चाहिए। त्रिखूटा चौका देकर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठ जाए तथा एक सहस्र मंत्र का जाप करे। तत्पश्चात् लाल कनेर के पुष्प, रक्त, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक जलाकर आगे रखे एवं जप का दशाँश अर्थात् सौ की

संख्या में आहुति देकर हवन करे।

जिस समय भैरव भयंकर रूप धारण कर सामने आयें, उस समय उनसे भयभीत न हों, अपितु पुष्पों की माला को उनके गले में डालकर तुरन्त ही उनके सामने लड्डू रख दें। इस विधि से भैरव साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं और वर माँगने के लिये कहते हैं। उस समय साधक को चाहिए कि वह उनसे त्रिवाचा भरवाकर सदैव वशीभूत रहने का वचन ले ले। ततपश्चात् अपने मन की अभिलाषा को भैरव के समक्ष प्रकट कर दे। भैरव साधक की उस अभिलाषा को पूर्ण कर देते हैं तथा भविष्य में भी साधक के वशीभूत रहकर उसकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते रहते हैं।

भैरव साधना मन्त्र (३)

पूर्वोक्त मन्त्र का दूसरा स्वरूप पाठ-भेद के अनुसार निम्नलिखित है—

ॐ नमो काली कंकाली, महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहै, मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे, आन बाँधूं बान बांधू, चलते फितरे को ओसान बाँधूं, दशोदिशा बाँधू, नौनाड़ी बहत्तर कोण बाँधू, फूल में भेजू फूल में जाय काठे जी पड़े, थर थर काँपै, हल हल हलै, गिर गिर परै, उठ उठ भगै, बक बक बकै, मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता

की शय्या पर पाँव धरे, वचन जो चूकै तो समुद्र सूखै, वाचा छोड़ कुवाचा करै तो धोबी की नाद चमार के कुण्ड में परै, मेरा भेजा बावला न करै तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़ै, सिर की जटा टूटि भूमि पर गिरै, माता पार्वती के चीर पै चोट, पड़ै बिना हुक्म के नहीं मारना, हो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इन मन्त्र की साधना-विधि यह है कि सूर्य-ग्रहण की रात्रि में त्रिकोण चौका लगाकर लाल कनेर के फूल, सिंदूर, लड्डू, जोड़ा लौंग तथा चौमुखा दीपक रखकर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके दशाँश हवन करे तो भैरव भयंकर रूप रखकर साधक के सामने आयेंगे, उस समय उनसे भयभीत न होकर उनके गले में माला पहनाकर सामने लड्डू रख दे। उसके बाद साधक जो भी काम कराना चाहे, भैरव कृपा करके उसे पूरा कर देते हैं।

भैरव चेटक

"ॐ नमो भैरवाय स्वाहा।"

इस नवाक्षर मंत्र का चालीस हजार की संख्या में जप करके गोधूलि का दशांश हवन करे। इस विधि से अठारह दिन तक जप तथा हवन करते रहने से भैरव प्रसन्न होकर साधक की मनोकामना को पूर्ण करते हैं।

आपत्ति उद्धारक बटुक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर, सोने, चाँदी अथवा ताँबे के ताबीज में भरकर दाईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से सभी विपत्तियों से छुटकारा मिलता है। यन्त्र के बीच में जहाँ 'अमुक' शब्द लिखा है, वहाँ व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।
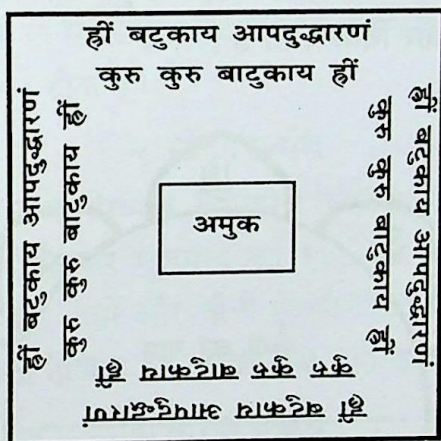
त्रिपुर भैरव यन्त्र

इस यन्त्र को नागर बेल के पान पर कर्पूर, केसर, कस्तूरी, चन्दन से लिखकर तैयार कर लें। यन्त्र के मध्य में रोगी व्यक्ति का नाम भी लिखें। इस तरह से यन्त्र बनाकर "**ॐ ह्रीं भैरवाय नमः**" इस मन्त्र का १०८ बार जप करके यन्त्रपत्र को

अभिमन्त्रित करने के बाद रविवार को अपने आप गिरे हुए पीपल के पत्ते में लपेटकर मलेरिया ज्वर के रोगी की भुजा पर बाँध देने से ज्वर समाप्त होता है। जिस मलेरिया के लिए कुनैन जैसी तीव्र और उष्णवीर्य औषधि दी जाती है, वह इस यन्त्र की सामान्य चिकित्सा से ठीक हो जाती है। आज भी तान्त्रिक इस यन्त्र के श्रद्धानुरूप प्रयोग द्वारा जो एक-दो या तीन दिन छोड़कर आने वाले ज्वर हैं उनका अचूक उपचार इस यन्त्र के माध्यम से कर दिया करते हैं।
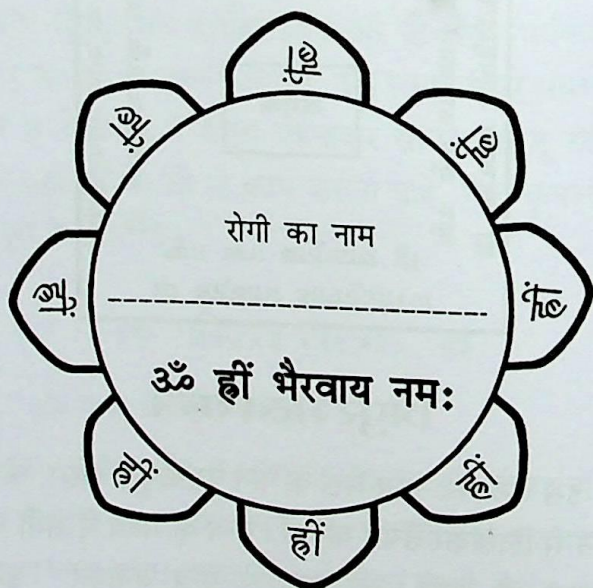
बटुक भैरव षटकर्म प्रयोग

(रुद्रयामल तन्त्र के अन्तर्गत एक दिन के प्रयोग)

१. स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन प्रातःकाल श्मशान में जाकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करे तथा अर्धरात्रि के समय जायफल, जावित्री तथा कनेर के फूल घृत में मिलाकर दशांश हवन करे तो शत्रुस्तम्भन होता है।

२. मोहन प्रयोग

सोमवार को मध्याह्न के समय कूपजल से स्नान कर पूजास्थल में बैठकर मूलमन्त्र का १०,००० तप करे तथा महिषी का घृत, दही और चीनी इनको मिलाकर हवन करे तथा हवन का तिलक करे तो जो देखे वही वश में हो।

३. मारण प्रयोग

मंगलवार को अर्धरात्रि के समय चौराहे पर जाकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करे। घृत, खीर, लाल चन्दन व स्त्री के केश मिलाकर दशांश हवन करे तो काल के समान होने पर भी शत्रु अवश्य नाश को प्राप्त हो।

४. आकर्षण प्रयोग

बुधवार को चार घड़ी सूर्य रहे तब सूने घर में जाकर

मूलमन्त्र का जप १०,००० करे। फिर घृत, खाँड, सनैली का फूल अथवा कनेर के फूल, बिल्व का फल, इन सबकी दशांश आहुति दे तो रम्भादिक अप्सरा भी आकर्षित हों।

५. वशीकरण प्रयोग

बृहस्पतिवार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय नदी के किनारे जाकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करे तथा घृत, आंवला और बिल्वपत्र का दशांश हवन करे तो वशीकरण हो।

६. उच्चाटन प्रयोग

शुक्रवार के दिन सायंकाल वटवृक्ष के नीचे बैठकर मूलमन्त्र का १०,००० जप करे फिर घृत, दूध, दही, ईख का रस, गोमूत्र और खीर मिलाकर दशांश का हवन करे तो शत्रु का उच्चाटन हो।

(१) अथ मूलमन्त्रः

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥

(२) श्री भैरवमन्त्रः

ॐ बं बं बं बटुकभैरवाय नमः। कृष्णभैरवाय नमः।

विविध प्रयोगों के लिए हवन सामग्री

१. वशीकरण के लिये—लाल पुष्प।
२. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये—कमल पुष्प।
३. दीर्घ आयु के लिये—दूर्वा।
४. रोगनाश के लिये—गुड़।
५. वस्त्र प्राप्ति के लिये—वस्त्र।
६. धान्य प्राप्ति के लिये—धान्य।
७. सर्वसिद्धि के लिये—पुत्रजीवी के फल।
८. पुत्र प्राप्ति के लिये—अश्वत्थसमिधा।
९. शत्रुनाश के लिये—लवण व घृत।
१०. वाक्‌सिद्धि के लिये—पलाश के फूल।
११. कवित्वप्राप्ति के लिये—कर्पूर-अगरु-गूगल।
१२. राजवश्य के लिये—सरसों तथा पटसन।
१३. अन्नवृद्धि के लिये—घृताक्त अन्न।
१४. चिरंजीविता के लिये—लाजा और घृत।

इसी प्रकार बहुत-सी वस्तुओं के द्वारा 'तिलक' करने से, 'अञ्जन' बनाकर लगाने से, 'मार्जन' करने से तथा अन्य तान्त्रिक विधानों से भी कार्यसिद्धियाँ होती हैं।

इस सब में श्रीबटुकभैरव का मन्त्र-जप आवश्यक है।

आपदुद्धारक बटुक-भैरव-अष्टोत्तर शतनामावली का पाठ भी इन कार्यों की सिद्धि के लिये अत्यन्त उपयोगी माना गया है। ग्रहण अथवा उत्तम पर्वों के अवसर पर मन्त्र का पुरुश्चरण कर लेने से ये प्रयोग शीघ्र फल प्रदान करने वाले कहे गये हैं।

श्री बटुक भैरव कवचम्

ॐ अस्य श्री बटुक भैरव कवचस्य आनन्द भैरव ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः श्री बटुक भैरवो देवता बं बीज ह्रीं शक्तिः ॐ बटुकायेति कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थेजपेविनियोगः॥

·श्री महादेव उवाच

प्रीयतां भैरवो देवै नमो वै भैरवाय च।
देवेशि देहरक्षायं कारणं कथ्यतां ध्रुवम्॥ १॥
म्रिर्यतेसाधका येन बिना श्मशानभूमिषु।
रणेषु चातिघोरेषु महामृत्युभये च॥ २॥
शृंगीसलिल वज्रेषु ज्वरादिव्याधि वह्निषु।

देव्युवाच

कथयामि शृणु प्राज्ञ बटुक कवचं शुभम्॥ ३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन मातृकाजारजो यथा।
ॐ सहस्त्रारे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः॥ ४॥
पातु माँ बटुको देवो भैरवः सर्वकर्मसु।
पूर्वस्याामसितांगो मां दिशि रक्षतु सर्वदा॥ ५॥

आग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्डभैरवः।
नैऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मतः पातुपश्चिमे॥ ६॥
वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात्सुरेश्वरः।
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा॥ ७॥
संहारभैरवः पायादीशन्यां च महेश्वरः।
ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नंदको विभुः॥ ८॥
सद्योजातस्तु मां पायात्सर्वतो देवसेवितः।
वामदेवो वनांते च वने घोरस्तथाऽस्तु॥ ९॥
जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च।
डाकिनी पुत्रकः पातु पुत्रान मे सर्वतः प्रभुः॥१०॥
हाकिनी पुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनीसुतः।
पातु शाकिनिका पुत्र सैन्यं वै कालभैरवः॥११॥
मालिनी पुत्रकः पातु पशूनश्वान् गजांस्तथा।
महाकालोऽवतु क्षेत्रं श्रियं मे सर्वतो गिरा॥१२॥
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्य संपदा।
एतत्कवचमीशान तव स्नेहात्प्रकाशितम्॥१३॥
नारव्येयं नरलोकेषु सारभूतं मुरप्रियम्।
यस्मै कस्मै न दातव्य कवचं सुरदुर्लभम्॥१४॥
न देयं परशिष्येभ्यः कृपणेभ्यश्च शंकर।
यो ददाति निषिद्धेभ्यः सर्वभ्रष्टो भवेत्किल॥१५॥
अनेन कवचेनैव रक्षा कृत्वा विचक्षणः।
विचरन्यत्र कुत्रापि न विघ्नैः परिभूयते॥१६॥

मंत्रेण रक्षते योगी कवच रक्षक यतः।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन दुर्लभं पाप चेतसाम्॥१७॥
भूर्जे रभांत्वचि वापि लिखित्वा विधिवत्प्रभो।
कुंकुमेनाष्टगंधेन गोरोचनैश्च केसरैः॥१८॥
धारयेत्पाठयेद्वापि संपठेद्वापि नित्यशः।
संप्राप्नोप्ति फलं सर्वं नात्रकार्या विचारणा॥१९॥
सततं पठयते यत्र तत्र भैरव संस्थितिः।
न शक्नोमि प्रभावं वै कवचस्यास्य वर्णितुम्॥२०॥
नमोभैरव देवाय सर्वभूताय वै नमः।
नमस्त्रैलोक्यनाथाय नाथनाय वै नमः॥२१॥

इति श्री भैरवतन्त्रे देवीरहस्योक्तं श्री बटुकभैरव कवचम् समाप्तम्॥

श्री स्वर्णाकर्षण-भैरव-स्तोत्रम्

यह स्तोत्र रुद्रयामल तन्त्र में ईश्वर और दत्तात्रेय के संवादरूप में कहा गया है। इसके आरम्भ में श्रीमार्कण्डेय ऋषि ने इस स्तोत्र के लिए पूछा है तथा श्रीनन्दिकेश्वर ने लोकोपकार की दृष्टि से इसका कथन किया है। वहीं इसका फल कहा गया है कि—यह दुर्लभ स्तोत्र है, सर्वपापों का नाशक है। सर्वविध सम्पत्ति का दाता, दरिद्रता को मिटाने वाला, आपत्ति निवारक, अष्टविध ऐश्वर्यदाता, विजयप्रद, कीर्तिकारी, सौन्दर्यकर, स्वर्णादि

अष्टसिद्धि का दाता सर्वोत्तम एवं भुक्ति-मुक्ति को देने वाला है। महाभैरव के भक्त, सेवाभावी, निर्धन तथा गुरुभक्त को यह स्तोत्र देना चाहिए। इतना कहकर ब्रह्मा, विष्ण और शिवरूप श्री भैरव का यह स्तोत्र सुनाया गया है।

इस स्तोत्र का विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान और मुद्राप्रदर्शन करके भक्तिपूर्वक पाठ करना चाहिए।

पूरा स्तोत्र तीन अंशों में है, जिनमें पहला अंश स्तोत्र की प्राप्ति के उपक्रम और महत्त्व का सूचक है। दूसरा अंश मूल स्तोत्ररूप है, जिसमें श्री स्वर्णाकर्षण भैरव के प्रस्तुत स्तोत्र के विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान एवं मुद्रा-प्रदर्शन का निर्देश करके नमस्कार सहित नामावलीरूप स्तोत्र का पाठ दिया है। तीसरा अंश स्तोत्र की फलश्रुति का है जिसमें स्तोत्र-पाठ के फल और पाठ-विधि के संकेत हैं।

स्तोत्र-प्रारम्भ

(स्तोत्र-प्राप्ति का उपक्रम एवं महत्त्व)

भगवन् प्रमथाधीश शिवतुल्य-पराक्रम्।
पूर्वमुक्तस्त्वया मन्त्री भैरवस्य महात्मनः॥ १॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि तस्य स्तोत्रमनुत्तमम्।
तत्केनोक्तं पुरा स्तोत्रं पठनात् तस्य किं फलम्॥ २॥
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहि मे नन्दिकेश्वर।

नन्दिकेश्वर उवाच

अयं प्रश्नो महाभाग! लोकानामुपकारकः॥ ३॥
स्तोत्रं बटुकनाथस्य दुर्लभं भुवनत्रये।
सर्वपाप-प्रशमनं सर्वसम्पत्-प्रदायकम्॥ ४॥
दारिद्र्यनाशनं पुंसामापदामपहारकम्।
अष्टैश्वर्यप्रदं नृणां पराजय-विनाशनम्॥ ५॥
महाकीर्त्तिप्रदं पुंसामसौन्दर्य-विनाशनम्।
स्वर्णाद्यष्ट महासिद्धि प्रदायकमनुत्तमम्॥ ६॥
भुक्तिमुक्तिप्रदं स्तोत्रं भैरवस्य महात्मनः।
महाभैरवभक्ताया सेविने निर्धनाय च॥ ७॥
निजभक्ताय वक्तव्यमन्यथा शापमाप्नुयात्।
स्तोत्रमेतद् भैरवस्य ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मकम्॥ ८॥
शृणुष्व रुचितो ब्राह्मन्! सर्वकाम-प्रदायकम्।

विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षणभैरव-स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः स्वर्णाकर्षणभैरव-परमात्मा देवता ह्रीं बीजं क्लीं शक्तिः सः कीलकं मम सर्वकामसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—

ब्रह्मर्षये नमः (शरसि), **अनुष्टुप्छन्दसे नमः** (मुखे), **स्वर्णाकर्षणभैरवपरमात्मने नमः** (हृदये), **ह्रीं बीजाय नमः** (गुह्ये), **क्लीं शक्तये नमः** (पादयो), **सः कीलकाय नमः** (नाभौ), **विनियोगाय नमः** (सर्वांगे)।

कर-हृदयादिन्यासः—

प्रथम बार	द्वितीय बार
ह्रां—अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ह्रीं—तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ह्रूं— मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ह्रैं—अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
ह्रौं—कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्रः—करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्—

पारिजातद्रुकान्तारे, स्थिते माणिक्य-मण्डपे।
सिंहासनगतं वन्दे, भैरवं स्वर्णदायकम्॥
गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं, वरं करैः सन्दधतं त्रिनेत्रम्।
देव्या युतं तप्तसुवर्णवर्णं, स्वर्णाकृषं भैरवमाश्रयामि॥

मूल स्तोत्र-पाठ

ॐ नमस्ते भैरवाय ब्रह्मविष्णु-शिवात्मने।
नमस्त्रैलोक्यवन्द्याय वरदाय वरात्मने॥ १॥
रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरणशोभिने।
दिव्यमाल्य-विभूषाय नमस्ते दिव्यमूर्तये॥ २॥
नमस्तेऽनेकहस्ताय अनेकशिरसे नमः।
नमस्तेऽनेकनेत्राय अनेकविभवे नमः॥ ३॥

नमस्तेऽनेककण्ठाय अनेकांसाय ते नमः।
नमस्तेऽनेकपाश्र्वाय नमस्ते दिव्यतेजसे॥ ४॥
अनेकायुधयुक्ताय अनेक सुरसेविने।
अनेक गुणयुक्ताय महादेवाय ते नमः॥ ५॥
नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पत्प्रदायिने।
श्रीभैरवी-संयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः॥ ६॥
दिगम्बर नमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः।
नमोऽस्तु दैत्यकालाय पापकालाय ते नमः॥ ७॥
सर्वज्ञाय नमस्तुभयं नमस्ते दिव्यचक्षुषे।
अजिताय नमस्तुभ्यं जितामित्राय ते नमः॥ ८॥
नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः।
नमोऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः॥ ९॥
नमस्ते घोरघोराय विश्वघोराय ते नमः।
नम उग्राय शान्ताय भक्तानां शान्तिदायिने॥ १०॥
गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे।
नमस्ते वाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः॥ ११॥
नमस्ते कामराजाय योषित्कामाय ते नमः।
दीर्घमायास्वरूपाय महामायाय ते नमः॥ १२॥
सृष्टिमाया-स्वरूपाय विसर्गसमयाय ते।
सुरलोक-सुपूज्याय आपदुद्धारणाय च॥ १३॥
नमो नमो भैरवाय महादारिद्र्यनाशिने।
उन्मूलने कर्मठाय अलक्ष्म्याः सर्वदा नमः॥ १४॥

नमोऽजामलबद्धाय नमो लोकेश्वराय ते।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः॥ १५॥
मम दारिद्र्य-विद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्द निहिताय ते॥ १६॥
नमः श्री बीजरूपाय सर्वकामप्रदायिने।
नमो महाभैरवाय श्रीभैरव नमो नमः॥ १७॥
धनाध्यक्ष नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः।
नमः प्रसन्नरूपाय आदिदेवाय ते नमः॥ १८॥
नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते रत्नरूपिणे।
नमस्ते स्वर्णरूपाय स्वर्णाय नमो नमः॥ १९॥
नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः।
नमः शुद्धाय बुद्धाय नमः संसारतारिणे॥ २०॥
नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः।
नमस्ते बालरूपाय परेषां बलनाशिने॥ २१॥
नमस्ते स्वर्णसंस्थाय नमो भूतलवासिने।
नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः॥ २२॥
नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः।
द्विभुजाय नमस्तुभयं भुजत्रयसुशोभिने॥ २३॥
नमोऽणिमादि-सिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः।
पूर्णचन्द्र-प्रतीकाशवदनाम्भोज शोभिने॥ २४॥
नमस्तेऽस्तु स्वरूपाय स्वर्णालङ्कारशोभिने।
नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभाय नमो नमः॥ २५॥

नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बरधारिणे।
स्वर्णसिंहासनस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः॥ २६॥
नमः स्वर्णाभपादाय स्वर्णकाञ्चीसुशोभिने।
नमस्ते स्वर्णजङ्घाय भक्तकामदुघात्मने॥ २७॥
नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्षस्वरूपिणे।
चिन्तामणिस्वरूपाय नमो ब्रह्मादि-सेविने॥ २८॥
कल्पद्रुमाधःसंस्थाय बहुस्वर्ण-प्रदायिने।
नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः॥ २९॥
स्तवेनानेन सन्तुष्टो भव लोकेश भैरव।
पश्य मां करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल॥ ३०॥

फलश्रुतिः

श्रीमहाभैरवस्येदं स्तोत्रमुक्तं सुदुर्लभम्।
मन्त्रात्मकं महापुण्यं सर्वैश्वर्य-प्रदायकम्॥ ३१॥
यः पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकैः स प्रमुच्यते।
लभते महतीं लक्ष्मीमष्टैश्वर्यमवाप्नुयात्॥ ३२॥
चिन्तामणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम्।
स्वर्णराशिमवाप्नोति शीघ्रमेव स मानवः॥ ३३॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेत् स्तोत्रं दशावृत्त्या नरोत्तमः।
स्वप्ने श्रीभैरवस्तस्य साक्षाद् भूत्वा जगद्गुरुः॥ ३४॥
स्वर्णराशिं ददात्यस्मै तत्क्षणं नास्ति संशयः।
अष्टावृत्त्या पठेद् यस्तु सन्ध्यायां वा नरोत्तमः॥ ३५॥
लभते सकलान् कामान् सप्ताहान्नात्र संशयः।
सर्वदा यः पठेत् स्तोत्रं भैरवस्य महात्मनः॥ ३६॥

लोकत्रयं वशीकुर्यादचलां श्रियमाप्नुयात्।
न भयं विद्यते क्वापि विषभूतादि-सम्भवम्॥ ३७॥
म्रियन्ते शत्रवस्तस्य ह्यलक्ष्मी नाशमाप्नुयात्।
अक्षयं लभते सौख्यं सर्वदा मानवोत्तमः॥ ३८॥
अष्टपञ्चाद् वर्णाढ्यो मन्त्रराजः प्रकीर्तितः।
दारिद्र्यदुःखशमनः स्वर्णाकर्षण-कारकः॥ ३९॥
य एनं सञ्जपेद् धीमान् स्तोत्रं वा प्रपठेत् सदा।
महाभैरव-सायुज्यं सोऽन्तकाले लभेद् ध्रुवम्॥ ४०॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे ईश्वर-दत्तात्रेयसंवादे
स्वर्णाकर्षण-भैरवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इस फलश्रुति का सार यह है कि—महाभैरव का यह स्तोत्र अति दुर्लभ है, मन्त्रात्मक, महापुण्य एवं सर्वैश्वर्य का दाता है। इसके एकाग्रचित्त होकर एकान्त में पाठ से पाप-मुक्ति, महान् लक्ष्मी, चिन्तामणि-कामधेनु-कल्पतरु के समान अष्ट ऐश्वर्य तथा शीघ्र ही स्वर्णराशि की प्राप्ति होती है। त्रिकाल दस पाठ करने से स्वप्न में साक्षात भैरव भगवान् पधारकर तत्काल स्वर्णराशि प्रदान करते हैं। प्रतिदिन आठ आवृत्ति करने से साधक एक सप्ताह में ही इच्छित फल प्राप्त करता है। नित्य पाठ से सर्व वशीकरण, अचल लक्ष्मी की प्राप्ति, भयनाश, शत्रुनाश, दरिद्र्यनाश तथा अक्षयसौख्य प्राप्त होते हैं।

श्री क्षेत्रपाल-भैरवाष्टक-स्तोत्रम्

ॐ यं यं यं यक्षरूपं दश दिशिवदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं संहारमूर्ति शुभमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्वरोमं करालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ १॥

रं रं रं रक्तवर्ण कटकटिततनुं तीक्षणदंष्ट्राविशालं,
घं घं घं घोरघोषं घ घ घ घ घटितं घर्घराघोरनादम्।
कं कं कं कालरूपं धगधगधगितं ज्वालितं कामदेहं,
दं दं दं दिव्यदेहं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ २॥

लं लं लं लम्बदन्तं लललललुलितं दीर्घजिह्वं करालं,
धूं धूं धूं धूम्रवर्ण स्फुटविकृतमुखं भासुरं भीमरूपम्।
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरमयमुखं ताम्रनेत्रं विशालं,
नं नं नं नग्नरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ३॥

वं वं वं वायुवेगं प्रलयपरिमितं ब्रह्मरूपं स्वरूपं,
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवननिलयं भास्करं भीमरूपम्।
चं चं चं चालयन्तं चलचलचलितं चालितं भूतचक्रं,
मं मं मं मायकायं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ४॥

शं शं शं शङ्खहस्तं शशिकरधवलं पूर्णतेजःस्वरूपं,
भं भं भं भावरूपं कुलमकुलकुलं मन्त्रमर्तिं स्वतत्त्वम्।

भं भं भं भूतनाथं किलकिलकितवचश्चारु जिह्वालुलुन्तं,
अं अं अं अन्तरिक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ५॥

खं खं खं खड्गभेदं विषममृतमयं काल-कालान्धकारं,
क्षिं क्षिं क्षिं क्षिप्रवेगं दह दह दहनं नेत्रसन्दीप्यमानम्।
हूं हूं हुङ्कारशब्दं प्रकटितगहनं गर्जितं भूमिकम्पं,
बं बं बं बाललीलं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ६॥

सं सं सं सिद्धियोगं सकलगुणमयं देवदेवं प्रसन्नं,
पं पं पं पद्मनाभं हरिहरवदनं चन्द्रसूर्याग्निनेत्रम्।
यं यं यं यक्षनाथं सततभयहरं सर्वदेवस्वरूपम्,
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ७॥

हं हं हं हंसघोषं हसितकहकहाराव-रौद्राट्टहासं,
यं यं यं यक्षरूपं शिरसि कनकजं मौकुटं सन्दधानम्।
रं रं रं रङ्गरङ्ग-प्रहसितवदनं पिङ्गलं श्यामवर्णं,
सं सं सं सिद्धनाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्॥ ८॥

एवं वै भावयुक्तः प्रपठति मनुजो भैरवस्याष्टकं यो,
निर्विघ्नं दुःखनाशं भवति भयहरं शाकिनीनां विनाशम्।
दस्यूनां व्याघ्रसर्पोद्भवजनितभियां जायते सर्वनाशः,
सर्वे नश्यन्ति दुष्टा ग्रहगणविषमा लभ्यते चेष्टसिद्धिः॥ ९॥

॥ इति श्री विश्वसारोद्धारे क्षेत्रपाल भैरवाष्टस्तोत्रम्॥

श्री बटुक भैरव ब्रह्म कवचराज

भगवती पार्वती द्वारा हठपूर्वक पूछने पर भगवान शंकर ने कृपा करके जो बटुकभैरव ब्रह्म कवचराज बतलाया था, वह इस प्रकार है—

अथ विनियोगः—

अस्य श्री बटुकभैरवकवचराजस्य भैरवऋषिरनुष्टुप्छन्दो बटुकभैरवो देवता मम सर्वार्थसाधने विनियोगः।

इतना कहकर विनियोगार्थ जल छोड़ें तथा नीचे लिखे श्लोकों का उच्चारण करते हुए उन-उन सूचित स्थानों पर तत्त्वमुद्रा से स्पर्श करते हुए न्यास करें अथवा केवल भावना-पूर्वक पाठ करें।

ॐ पातु शिरसि नित्यं पातु ह्रीं कण्ठदेशके।
बटुकं पातु हृदये आपदुद्धारणाय च॥ १॥
कुरुद्वयं में लिंगस्य आधारे बटुकाय च।
सर्वदा पातु ह्रीं बीजं वाह्वोर्युगलमेव च॥ २॥
षडङ्गसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः।
ॐ ह्रीं बटुकाय सततं सर्वांगे मम सर्वदा॥ ३॥
ॐ ह्रीं कालाय पादयोः पातु पातु वीरासनं हृदि।
ॐ ह्रीं महाकालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः॥ ४॥

दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवी-सहितस्ततः।
ललिता भैरवः पातु अष्टाभिः शक्तिभिः सह॥ ५॥
विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गे मम सर्वदा।
अन्नपूर्णा सदा पातु अंसं रक्षतु चण्डिका॥ ६॥
असिताङ्ग शिरः पातु ललाटं पातु भैरवः।
चण्डभैरवः पातु वक्त्रे कण्ठे श्रीक्रोधभैरवः॥ ७॥
मूलाधारं भीषणश्च बाहुयुग्मं च भैरवः।
हंसबीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु प्राणयोः॥ ८॥
प्राणापानसमानं च उदानं व्यानमेव च।
रक्षन्तु द्वारमूले तु दशदिक्षु समन्ततः॥ ९॥
प्रणवः पातु सर्वांग लज्जाबीजं महाभये।
इति श्रीब्रह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम्॥ १०॥

श्री भैरव जी की आरती (१)

ॐ जय जय जय भैरव बाबा। स्वामी जय जय भैरव बाबा॥

नमो विश्व भूतेश भुजंगी मंजुल कहलावा।
उमानन्द अमरेश विमोचन जनपद सिरनावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

काशी के कुतवाल आपको सकल जगत ध्यावा।
स्वान सवारी बटुकनाथ प्रभु मद पी हरषावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

रवि के दिन जग भोग लगावैं मोदक तन भावा।
भीषण भीम कृपालु त्रिलोचन खप्पर भर खावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

शेखर चन्द्र कृपाल शशि प्रभु मस्तक चमकावा।
गलमुण्डन की माल सुशोभित सुन्दर दरसावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

नमो नमो आनन्द कन्द प्रभु लटगत मठ झावा।
कर्ष तुण्ड शिव कपिल त्रयम्बक यश जग में छावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

जो जन तुम्हरो ध्यान लगावत संकट नहिं पावा।
छीतरमल जन शरण तुम्हारी आरति प्रभु गावा॥
ॐ जय जय भैरव बाबा।

श्री बटुक भैरव की आरती (२)

आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
विपदा विदारण भक्त हृदय की॥
हाथ त्रिशूल गले मुण्डमाला।
डमरू खड्ग त्रिनेत्र विशाला॥
राजत चन्द्रकला शिव नीकी।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
क्षेत्रपाल शमशान के वासी।
व्यालपवीत हाथ यम फँासी॥
शोभित रूप दिगम्बर नीकी
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
जयशंकर प्रियबन्धन हारी।
बलिमुकनाथ शत्रुलयकारी॥
वाहन स्वान जगत के फीकी।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
व्याघ्र चर्म पहिरत योगिनपति।
काशी द्वारपाल भैरव पति॥
पशुपति भिक्षुक भेष वटुक की।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।

मूसल दक्षिण अंग बहन्ता।
खप्परधारी योगिन कन्ता॥
अष्टमूर्ति भूधर योगी की।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
दिगम्बर बटुकेश कृपाला।
काल शमन कंकाल कपाला॥
नाश करत तुम नित दुष्टन की।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
बटुक भैरव की जो आरती गावै।
व्याघ्र चर्म रुद्राक्ष चढ़ावै॥
रक्षा करत प्रभु ताके घर की।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।
ब्रह्मदेव यह आरती गावत।
विल्ब पत्र फल लै नित आवत॥
आरती करत काल भैरव की।
आरती कीजै श्री बटुक भैरव की।

आरती श्री भैरव जी की (३)

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।
सुरनर मुनि सब करते, प्रभु तुम्हरी सेवा॥ जय०
तुम्हीं पाप उद्धारक, दुःख सिन्धु तारक।
भक्तों से सुख कारक, भीषण वपु धारक॥ जय०
वाहन श्वान विराजत, कर त्रिशूलधारी।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी॥ जय०
तुम बिन शिव की सेवा, सफल नहीं होवे।
चतुर्वर्तिका दीपक, दर्शन दुःख खोवे॥ जय०
तेल चटक दधिमिश्रित माषावली तेरी।
कृपा कीजिए भैरव, करो नहीं देरी॥ जय०
पांव घूंघरू बाजत, डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक, जन मत हरषावत॥ जय०
श्री भैरव की आरती, जो कोई गावे।
सो नर जग में निश्चय, मनवांछित फल पावे॥ जय०

भैरव नाथ की आरती (४)

ॐ जय भैरवनाथा, प्रभु जय जय भैरवनाथा।
वेद पुराण शास्त्र सब, गाते तव गाथा॥
ॐ जय भैरवनाथा।

विद्या वसु वसुधासुत, दायक तुम मेरे।
कृपा करो हे स्वामिन, हम सब तव चेरे॥
ॐ जय भैरवनाथा।

सारे क्लेश हटाओ, दुर्गुण सब मेरे।
नाश करो पापों का, द्वारा खड़ा तेरे॥
ॐ जय भैरवनाथा।

सांग सपर्या मेरी, प्रभु स्वीकार करो।
जो भी कुछ संकट हो, उनको दूर करो॥
ॐ जय भैरवनाथा।

बाल समझकर मेरा, पालन आप करो।
महामूर्ख अज्ञानी, मुझ पर कृपा करो॥
ॐ जय भैरवनाथा।

नाथ! दया कर झटपट, मुझको अपनाओ।
कृपा सिंधु करुणाकर, करुणा बरसाओ॥
ॐ जय भैरवनाथा।

इन्द्रादिक सुरवर भी, तेरे अर्चन में।
सक्षम नहीं हो सकते, सांग समर्चन में॥
ॐ जय भैरवनाथा।
पाद्यादि जो सेवा, बन पायी मुझसे।
श्री स्वरूप को स्वामी, मुक्त करो भय से॥
ॐ जय भैरवनाथा।

भैरव जी की अर्जी (मेंहदीपुर वाले)

सुनो जी भैरव लाड़िले, कर जोड़ कर विनती करूँ।
कृपा तुम्हारी चाहिए, मैं ध्यान तुम्हारा ही धरुँ।
मैं चरण छूता आपके, अर्जी मेरी सुन लीजिये।
मैं हूँ मति का मन्द, मेरी कुछ मदद तो कीजिये।
महिमा तुम्हारी बहुत, कुछ थोड़ी सी मैं वर्णन करूँ॥
करते सारी स्वान की, चारों दिशा में राज्य है।
जितने भूत और प्रेत, सबके आप ही सरताज हैं।
हथियार हैं जो आपके, उसका क्या वर्णन करूँ॥
माता जी के सामने तुम, नृत्य को करते सदा।
गा गा के गुण अनुवाद से, उनको रिझाते हो सदा।
एक सांकली है आपकी, तारीफ उसकी क्या करूँ॥
बहुत सी महिमा तुम्हारी, मेंहदीपुर सरनाम है।

आते जगत के यात्री, बजरंग का स्थान है।
श्री प्रेतराज सरकार के, मैं शीश चरणों में धरूँ॥
निशदिन तुम्हारे खेल से, माताजी खुश रहें।
सिर पर तुम्हारे हाथ रखकर, आशीर्वाद देती रहें।
कर जोड़ कर विनती करूँ, अरु शीश चरणों में धरूँ॥

श्री बटुकभैरव के भयनाशक दस नाम

कपाली कुण्डली भीमो भैरवो भीमविक्रमः।
व्यालोपवीती कवची शूली शूरः शिवप्रियः॥
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
भैरवी-यातना न स्याद् भयं क्वापि न जायते॥

जो भी व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इन दस नामों का उच्चारण करता है उसे कोई दुःख अथवा यातना नहीं सताती।

१. कपाली
२. कुण्डली
३. भीमो
४. भैरवो
५. भीमविक्रम
६. व्यालोपवीति
७. कवची
८. शूली
९. शूर
१०. शिवप्रिय

पुष्पांजलि-प्रार्थना

जो भी अर्पण मैं करुँ, पत्र पुष्प फलवारि।
ग्रहण करो इस दास के, करो कृपा त्रिपुरारि॥
आवाहन नहीं जानता, तथा विसर्जन नाथ।
अर्चन आदि भी नहीं, सुनिये भैरव नाथ॥
मन वाणी और कर्म से, नहीं गात मेरी नाथ।
अन्तर्मन से जानता, तुम्हें त्रिलोकी नाथ॥
इस भव से पारावार में, योनि नाथ हजार।
कहीं रहूँ केवल तुम्हें, पूजूँ बारम्बार॥
मुझको अविचल भक्ति दो, मैं शरणागत नाथ।
अपनाकर इस जीव को, करिये आप सनाथ॥
देवदान कर्ता तथा, भोक्ता देव स्वरूप।
स्थिति नाम इस जगत की, व्यापक आप अनूप॥
उस दयालु रुप को, जप कर हो तद्रूप।
प्राप्त करुँ मैं शीघ्र ही, जो सर्वेश्वर रूप॥
जो अक्षर पद-भ्रष्टता, तथा मात्रा-हीन।
क्षमा करें इस दीन को, अस्थिर मन से कीन॥
देव देव! क्षमिये मुझे अन्तर्यामी आप।
तव चरणों की निश्चला, भक्ति दो निष्पाप॥

इस प्रकार ऐसी भावयुक्त प्रार्थना के बाद पुष्पांजलि अर्पण करने के साथ-साथ साष्टांग प्रणाम करना चाहिए तथा जल छोड़ते हुए मैंने जो भी किया वह भैरवनाथ को अर्पण हो, ऐसा कहें।

श्री भैरवनाथ एक दन्त कथा

अब यहाँ पर भैरोंनाथ के सम्बन्ध में प्रचलित एक प्राचीन दन्त-कथा का उल्लेख किया जा रहा है, जो वैष्णोदेवी क्षेत्र में अत्यधिक प्रचलित है। कथा इस प्रकार है—

गुरु गोरखनाथ के सम्प्रदाय का एक भैरोंनाथ नामक योगी बहुत बड़ा तान्त्रिक और प्रभावशाली था। उसके ३६० शिष्य थे। वह वैष्णवों तथा शक्ति के उपासकों (शाक्तों) का परम शत्रु था। जहां कहीं भी उसे विष्णु अथवा देवी की उपासना करने वाले लोग मिलते, वहीं वह उन्हें नाना प्रकार के कष्ट पहुँचाता था। उसके अत्याचार से सभी धर्मात्मा लोग काँपने लगे थे और लाचार होकर उसकी अनुचित आज्ञाओं का पालन किया करते थे। उस दुष्ट योगी ने अपने प्रभुत्व वाले क्षेत्रों मे मद्य-माँस का खूब प्रचार कर दिया था। स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म त्यागकर व्यभिचारिणी बन गईं थीं तथा पुरुष उसके इशारे पर अनेक प्रकार के उपद्रव मचाते तथा वैष्णवों को दुःख पहुंचाया करते थे।

जब राजकुमारी चन्द्रभागा की प्रार्थना पर भगवती दुर्गा ने चन्द्रभागा (चिनाव) नदी के तट पर अपना निवास बनाया और वहाँ भक्तों की भीड़ उनकी दर्शन के लिए भारी संख्या में पहुँचने लगी तथा माता की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलने लगी, तो उनके यश को सुनकर दुष्ट भैरोंनाथ ने उनकी परीक्षा लेने का विचार किया और वह अपने ३६० शिष्यों को साथ लिये हुए 'गोरख टीला' (जिला झेलम) से चलकर माता के निवास स्थान मन्त्रीपुर (वजीराबाद-जम्मू राज्य) में जा पहुँचा।

देवी माता ने आने वाले और लोगों की तरह उसका भी स्वागत सत्कार किया तथा उसे मद्य-माँस को त्यागकर वैष्णव भोजन करने तथा धर्म की मर्यादा का पालन करने का उपदेश किया। परन्तु भैरोंनाथ तो माता की परीक्षा लेने और उन्हें नीचा दिखाने के उद्देश्य से आया था, इसलिए उसने माता के उपदेश को अनसुना करते हुए कहा—"हे देवी! मैंने सुना है कि आप सब लोगों की इच्छा पूरी करती हैं, अतः अब मेरी भी इच्छा पूर्ण करें।"

माता ने पूछा—"तुम्हारी क्या इच्छा है?" तो दुष्ट भैरोंनाथ उनकी ओर पापपूर्ण कामुक-दृष्टि से देखने लगा और उनकी साड़ी के पल्ले को पकड़ने की कोशिश करने लगा। उस दुष्ट की मनोभावना को समझकर माता उसी समय वहाँ से अन्तर्धान होकर जम्मू नगर में जा पहुँचीं।

जम्मू नगर से ५ मील की दूरी पर 'नगरकोटा' (नगरोटा)

नामक एक गाँव है। जिस समय माता जम्मू नगर में पहुँची, उस समय उक्त गाँव में कुछ लड़कियाँ गेंद का खेल, खेल रही थीं। माता भी एक कन्या का रूप बनाकर उनके बीच में जा पहुँची और खेल में शामिल हो गईं। कुछ देर तक खेलने के बाद माता ने अपनी दिव्यशक्ति के प्रभाव से उन सब लड़कियों को स्वादिष्ट भोजन खिलाये। तत्पश्चात् उन्होंने एक लड़की से पानी ले आने के लिए कहा। उस समय लड़की ने यह उत्तर दिया कि मेरे पास 'कौल' (कटोरा) नहीं है। साथ ही यहाँ पर कहीं पानी भी नहीं है, जो मैं ला सकूं। यह सुनकर माता ने उस लड़की को एक सोने का कटोरा देकर कुछ दूरी पर दिखाई देने वाले एक सूखे गड्ढे की ओर संकेत करते हुए कहा—'तू इस कौल (कटोरे) को ले जाकर उस गड्ढे में से पानी भर ला।' यह कहकर माता ने अपनी दृष्टिमात्र से ही उस सूखे गड्ढे को जल से परिपूर्ण कर दिया। तब वह लड़की उस कटोरे को लेकर गड्ढे में से पानी भर लाई। कौल (कटोरे) को कंधोलने (हिलाने) से उस स्थान पर पानी निकला था इसलिए इस स्थान का नाम (कौलकन्धौली) पड़ गया। यह स्थान वैष्णोदेवी की यात्रा का दर्शनीय स्थल है।

उस कौल-कन्धौली नामक स्थान पर भगवती रहने लगी तो कुछ ही दिनों में उनका यश वहाँ पर भी दूर-दूर तक फैल गया और लोग उनके दर्शनों के लिए कौल-कंधौली पहुंचने लगे तथा मनोभिलाषा पूर्ण करने लगे। भगवती भी वहाँ रहकर

कन्याओं के साथ खेलने तथा अपने भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने लगीं।

कौल-कंधौली के क्षेत्र में ही 'माईदेवा' नामक भगवती की एक पुजारिन रहा करती थी। उसने बाल्यावस्था में ही दुर्गा देवी का भजन पूजन किया था और वृद्ध हो जाने पर भी उसके नित्य नियम में कोई परिवर्तन नहीं आया था। वह रात-दिन माता की सेवा-पूजा में ही लगी रहती थी। भगवती वैष्णवी देवी ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देकर कृतार्थ किया, साथ ही यह वरदान भी दिया कि मेरी पूजा के साथ तेरी पूजा भी हुआ करेगी और जो लोग तेरा दर्शन करने के बाद मेरे दर्शन करेंगे, उनकी सब मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी।

देवी से यह आशीर्वाद पाकर माईदेवा सदैव के लिए अमर हो गई। कुछ समय बाद जब उसने शरीर त्यागा तो उसी स्थान पर भक्तजनों ने एक मन्दिर का निर्माण करा दिया, जो वर्तमान समय में 'देवामाँई या माँईदेवा ढक' के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान वैष्णो देवी यात्रा में दर्शनीय है।

कौल-कन्धौली में भगवती के निवास की प्रसिद्धि जब चारों ओर फैल गई तो भैरोंनाथ को भी उसका पता लगा। तब वह कौल-कन्धौली पहुंचकर देवी से मिलने का विचार करके अपने ३६० शिष्यों को साथ लिये हुए जम्मू के लिए चल पड़ा।

मार्ग में 'हंसाली' नामक गाँव पड़ता था, जिसमें देवी के

परमकृपा पात्र पं० श्रीधर भगत रहा करते थे।

भैरोंनाथ को जब यह पता चला कि पं० श्रीधर देवी के बड़े भक्त हैं और माता उनके ऊपर विशेष कृपा करके हंसाली में भी निवास करती हैं, तो वह अपने सब शिष्यों के साथ लिये हुए पं० श्रीधर के निवास-स्थान पर जा पहुँचा और उन्हें भण्डारा देने के लिए विवश करने लगा।

पं० श्रीधर गरीब ब्राह्मण थे। भैरोंनाथ को ३६० शिष्यों सहित भण्डारा दे पाना उनके वश की बात नहीं थी। उधर भैरोंनाथ का कहना था कि मैं तुमसे भण्डारा लिये बिना नहीं मानूंगा। ऐसी स्थिति में जब पं० श्रीधर अत्यन्त दुःखी और चिन्तित थे, उस समय माता ने वहाँ प्रकट होकर अपने भक्त से कहा कि तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। तुम भण्डारा देने के लिए कहा दो। मैं तुम्हारा सब प्रबन्ध कर दूंगी।

माता का आदेश मानकर श्रीधर भक्त ने भैरोंनाथ को भण्डारा देना स्वीकार कर लिया। उस समय वैष्णवी माता ने अपनी शक्ति के प्रभाव से सोनेचाँदी के बर्तनों सहित अनेक प्रकार के पकवान वहाँ पर उपस्थित कर दिये। फिर वे स्वयं ही भोजन परोसने के लिए प्रकट हुईं और भैंरोंनाथ के सभी शिष्यों को 'भूमिका' नामक स्थान पर बैठाकर, इच्छानुसार भोजन कराकर तृप्त कर दिया। जब सब शिष्य भोजन कर चुके, तब भैरोंनाथ ने भगवती के सामने पहुँचकर अपने लिए मद्य-मांस के भोजन की मांग की। भगवती ने उसे उत्तर देते हुए

कहा कि मद्य-मांस तो राक्षसों का भोजन है, अतः मैं तुम्हें ऐसा भोजन नहीं दे सकती। यदि तुम सात्विक भोजन करना चाहो तो वह उपस्थित है।

जिस समय माता यह कह रहीं थीं उसी समय पापी भैरोंनाथ ने, जो पहले से ही माता के सम्बन्ध में कुविचार रखता था, आगे बढ़कर उनके हाथ को पकड़ना चाहा यह देखकर माता वैष्णवी वहाँ से उसी समय अन्तर्ध्यान हो गईं और भैरोंनाथ दूसरी बार भी हाथ मलता हुआ रहा गया। परन्तु उसने हार नहीं मानी और वह भगवती का पीछा करता हुआ आगे बढ़ने लगा।

भैरोंनाथ को वहीं पर छोड़कर भगवती वैष्णवी कुछ दूर चलकर पहाड़ के नीचे उस स्थान पर जा पहुँची, जिसे वर्तमान समय में 'बाण गंगा' कहा जाता है।

भगवती के शेर को प्यास लग आई थी, साथ ही भगवती स्वयं भी स्नान करने की इच्छुक थीं, इसलिए उन्होंने इस स्थान पर अपने धनुष से बाण चलाकर, पृथ्वी से जल निकाला था। इसी कारण इस जलधारा को 'बाण गंगा' कहा जाता है। इसके बाद भगवती ने उसे धारा में अपने सिर के बाल (केश) भी धोये थे, इस कारण उसे 'बालगंगा' के नाम से भी पुकारा जाता है।

बाण-गंगा के स्थान पर जब भगवती का शेर पानी पी रहा था, तो पीछे से आते हुए भैरोंनाथ ने उसे दूर से ही देख लिया,

परन्तु जब तक भैरोंनाथ उस स्थान पर पहुंचे, उससे पहले ही भगवती उस जगह जा पहुँची, जिसे वर्तमान समय में 'चरणपादुका' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

कहा जाता है कि 'चरणपादुका' नामक स्थान पर भगवती ने अपने चरण पर्वत से ऊपर रखे थे तथा शीघ्रता के कारण इसी स्थान पर भगवती के चरणों की पादुका (खड़ाऊँ) रह गई थीं। कुछ लोगों के अनुसार इस स्थान पर भगवती सती के पवित्र चरण गिरे थे इसलिए इस स्थान को 'चरणपादुका' कहा जाता है और वह ५१ शक्तिपीठों में से एक है, परन्तु यह मत निर्विवाद रूप से मान्य नहीं है।

हंसाली से चलकर भैरोंनाथ पहले 'बाण-गंगा' और फिर 'चरणपादुका' नामक स्थान पर पहुँचा परन्तु तब तक भगवती उस जगह जा पहुँचीं, जिसे वर्तमान समय में 'आदकुमारी' कहा जाता है। यह शब्द 'आदिकुमारी' का अपभ्रंश है। इस स्थान पर माता कुछ देर ठहरी थीं। वर्तमानकाल में यहाँ भगवती का एक छोटा सा मन्दिर बना हुआ है।

जब भैरोंनाथ आदिकुमारी स्थान पर भी पहुँचने को हुआ, तब माता वैष्णवी देवी गर्भ-गुफा में से निकलकर अपनी त्रिकूट पर्वत वाली गुफा में ही पुनः जा विराजीं। गर्भ गुफा को 'गर्भ जून' भी कहा जाता है। इस गुफा की बनावट ऐसी है कि जो व्यक्ति इस गुफा के भीतर पहुँच जाता है, वह गुफा से बाहर निकलने के लिए ठीक उसी प्रकार छटपटाने लगता है, जिस

प्रकार कि गर्भस्थ शिशु गर्भ से बाहर निकलने के लिए छटपटाता है।

जिस समय भैरोंनाथ भगवती का पीछा कर रहा था, उस समय इस गुफा ने एक दुर्ग (किले) जैसा काम किया था और भैरोंनाथ बड़ी देर तक इस गुफा के भीतर घुसकर बाहर निकलने के लिए छटपटाता रहा था।

भगवती जिस समय अपने त्रिकूट पर्वत वाली गुफा में प्रविष्ट हुईं, उस समय उन्होंने गुफा के दरवाजे पर अपने लांगुरवीर को दरबान बनाकर खड़ा कर दिया तथा उसे यह आज्ञा दी थी कि भैरोंनाथ को गुफा के भीतर प्रवेश न करने दे।

जब माता अपनी गुफा में आ विराजीं, तब देवताओं ने वहाँ पहुँचकर माता का विधिवत् पूजन किया और उनसे आशीर्वाद लेकर अपने-अपने लोक को प्रस्थान किया।

इधर गर्भ गुफा में से निकलने के बाद भैरोंनाथ भी एक दिन सब ओर से पता लगाता हुआ त्रिकूट पर्वत वाली गुफा के मुख्य द्वार पर जा पहुँचा। वहाँ पर जैसे ही उसने गुफा के भीतर प्रवेश करना चाहा वैसे ही लांगूरवीर ने उसे रोकते हुए पूछा—'तुम यहाँ किसलिए आये हो?' भैरोंनाथ ने उत्तर में कहा—'तुम्हारी माता ने मुझे भोजन का निमन्त्रण दिया था, मैं उसी के लिए आया हूँ। अब तुम अपनी माता से जाकर कहो कि वह मुझे मद्य-मांस का भोजन देकर तृप्त करें।'

यह सुनकर लांगुरवीर ने उसे धिक्कारते हुए कहा—'अरे

पापी! तू यहाँ से शीघ्र भाग जा, अन्यथा मैं तेरा सिर काट डालूँगा।' तब भैरोंनाथ ने उत्तर में कहा—'मैंने तपस्या करके वरदान प्राप्त किया है, जिसके प्रभाव से कोई भी मनुष्य मुझे नहीं मार सकता। भला तू मुझे क्या मारेगा?' यह कहकर वह लांगुरवीर से युद्ध करने पर उतारू हो गया। तब लांगुरवीर और भैरोंनाथ में भयंकर युद्ध होने लगा। जब उस युद्ध को चलते हुए काफी देर हो गई, तब माता वैष्णवी और अधिक लीला कराना उचित न समझकर, गुफा से बाहर निकल आईं और उन्होंने अपने त्रिशूल द्वारा क्षणभर में ही भैरोंनाथ के सिर को काटकर धड़ से अलग कर दिया।

इस प्रकार जब भैरोंनाथ का समस्त अहंकार चूर हो गया, उस समय उसका कटा हुआ सिर माता वैष्णवी की प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहने लगा—'हे माता! मुझ पापी ने अनेक अपराध किये हैं, परन्तु अब आप उन सबको क्षमा कर देने की कृपा करें। क्योंकि पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाये, परन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती है। अब आप दया करके मुझे ऐसा वरदान दें कि मेरा नाम भी संसार में अमर बना रहे तथा सब पापों से छुटकारा पाकर आपके परमधाम को प्राप्त करूँ।'

इस प्रकार जब उस कटे हुए सिर ने बहुत अनुनय विनय की, तो माता को उस पर दया आ गई। उस समय माता ने उस वर देते हुए कहा—'आज से मेरी पूजा के साथ तेरी पूजा भी हुआ करेगी और जो लोग मेरे दर्शन को यहाँ आयेंगे, वे तेरे

दर्शन भी अवश्य किया करेंगे तभी उनकी यात्रा सफल होगी। परन्तु सब लोग मेरे दर्शन करने के बाद तेरे दर्शन करेंगे। जो व्यक्ति पहले तेरे दर्शन करने के बाद मेरे दर्शन करेगा, उसकी यात्रा अवश्य निष्फल हो जायेगी। अब तू मेरे अनुग्रह से मेरे धाम को प्राप्त करेगा।'

यह कहकर माता वैष्णवी देवी ने सुदर्शन चक्र द्वारा भैरोंनाथ के सिर को उस गुफा से दो कोस की दूरी पर पटक दिया। वहाँ गिरते ही वह पत्थर का हो गया। भैरोंनाथ का धड़ गुफा के द्वार पर ही पड़ा रहा और वहीं उसने पत्थर का रूप धारण कर लिया।

जिस स्थान पर भैरोंनाथ का सिर गिरा था, वहाँ पर वर्तमान समय में 'भैरव मन्दिर' बना हुआ है। वैष्णोदेवी की यात्रा के लिए जाने वाले लोग लौटते समय इस मंदिर के दर्शन करते हैं तथा माता द्वारा भैरोंनाथ को दिये गए वरदान के फलस्वरूप उनकी यात्रा सफल होती है।

भैरोंनाथ के मारे जाने पर उसके सब शिष्य तथा अनुयायी भी त्रिकूट पर्वत की गुफा के द्वार पर पहुँचकर माता की स्तुति प्रार्थना करने लगे तथा अपने अपराधों की क्षमा माँगते हुए इस प्रकार के दीन वचन कहने लगे—'हे माता! जिस प्रकार आपने भैरोंनाथ का उद्धार किया उसी प्रकार हम लोगों का उद्धार करने की भी कृपा करें तथा हमारे सब पापों को उदारता पूर्वक क्षमा कर दें।'

उनकी स्तुति-प्रार्थना से प्रसन्न होकर माता वैष्णवी ने उन सबके अपराधों को भी क्षमा कर दिया, साथ ही यह भी कहा कि मेरा जो भक्त इस वृत्तान्त को कहेगा अथवा सुनेगा उसके भी सब पाप दूर हो जायेंगे।

उज्जैन के काल भैरव

मध्यप्रदेश में उज्जैन एक महत्त्वपूर्ण जगत प्रसिद्ध राजा भोज की नगरी मानी जाती है। शास्त्रों में इसका सांगोपांग वर्णन मिलता है। यहीं पर महाकालेश्वर और कालभैरव के मंदिर अत्यन्त ही चमत्कारिक और सिद्धिदायक तथा विख्यात हैं। महाकालेश्वर को द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना गया है और कालभैरव की मूर्ति प्रत्यक्ष और चमत्कारिक है।

प्राचीनकाल में उज्जैन में अष्टभैरव के विशाल और दर्शनीय मंदिर थे। कालभैरव का वर्तमान मंदिर भी उनमें से एक था। भैरव का यह मंदिर तन्त्र-साधना एवं मंत्र-सिद्धि को अनोखा, अद्‌भुत और श्रेष्ठ मंदिर है।

कहा जाता है कि किसी भी स्त्री या पुरुष साधक के द्वारा कालभैरव के गोपनीय मन्त्र का एक बार उच्चारण करके इस मन्दिर में स्थित कालभैरव की मूर्ति के ओठों से जैसे ही सुरा की बोतल लगाई जाती है, सुरा एकाएक खत्म ही हो जाती है और साधक के मन की जो भी इच्छा होती हैं, वह पूरी हो जाती

है कालभैरव का गोपनीय मन्त्र '**ॐ भैरवाय वं वं वं हां क्षौं नमः**' है।

भारत के प्रसिद्ध योगी और भैरव साधक स्वीकार करते हैं कि उज्जैन का यह मंदिर तथा इस मंदिर में स्थित कालभैरव की मूर्ति चमत्कारिक और सिद्धिप्रद है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा से अपनी इच्छा इस मंदिर में व्यक्त करता है तो वह कालान्तर में अवश्य पूर्ण होती है।

उन्मत्त भैरव

आठ प्रमुख भैरवों में उन्मत्त भैरव का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काश्मीर में अमरनाथ के दर्शन करने के बाद साधक उन्मत्त भैरव के दर्शन करता है। यह प्रसिद्ध भैरव पीठों में से एक पीठ है। आदि शंकराचार्य ने स्वयं इस पीठ की स्थापना कर इस मूर्ति का प्राण संजीवन किया था।

अमरनाथ गुफा के दक्षिण में लगभग आधा किलोमीटर आगे उन्मत्त भैरव का यह महत्त्वपूर्ण पीठ है और इस पीठ से सम्बन्धित सैकड़ों-हजारों चमत्कारिक कथाएँ भारत में विख्यात हैं। यदि साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ नंगे पांव इस पीठ में जाकर उन्मत्त भैरव को भोग लगाता है तो भैरव स्वयं उस भोग को स्वीकार करते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

इस भैरव की भोगविधि इस प्रकार है कि साधक बेसन

को भूनकर उसमें मधु व सुरा मिलाकर लड्डू बनाये और उस लड्डू को भैरव की निकली हुई जीभ पर रख दे तो दूसरे ही क्षण वह जीभ स्वतः ही भैरव के मुंह में चली जाती है और लड्डू उदरस्थ हो जाता है। दूसरे की क्षण वह जीभ पुनः बाहर निकल जाती है और जीभ से निकली सुरा की कुछ बूंदों को साधक प्रसाद रूप में स्वीकार कर लेता है तो निश्चय ही उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

इस भैरव मंदिर के पीछे के भाग में गर्म पानी का स्रोत है। इस पानी में नहाने से किसी भी प्रकार की बीमारी समाप्त हो जाती है। अतः यह पानी सैकड़ों प्रकार के रोगों को समाप्त करने में सक्षम है, लोग इस पानी को भरकर अपने साथ ले जाते हैं।

रोगहर्ता व पुत्रदायक कार्यों में इस भैरव की भारी महत्ता है। यदि मूर्ति के समक्ष बैठकर नेत्र बंद कर अपनी कोई भी इच्छा व्यक्त करता है तो उसका उत्तर तत्क्षण मानस-पटल पर स्पष्ट हो जाता है।

क्षमा प्रार्थना—पुस्तक में दिए गये सभी पाठ, मन्त्र, स्तुति, वन्दना इत्यादि यथा सम्भव शुद्ध छापने का पूरा प्रयास किया गया है। यदि किसी पाठक को कोई त्रुटि दिखाई दे तो कृपया ठीक कर लें और हमें भी सूचित करें, हम नए संस्करण में सुधार देगें।

—संग्रहकर्ता, प्रकाशक, मुद्रक

रणधीर प्रकाशन

1. बहुउपयोगी, बेजोड़ पुस्तकों की नवीन शृंखला
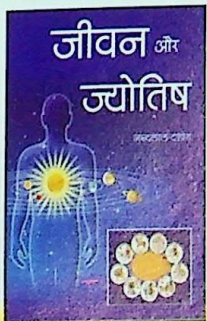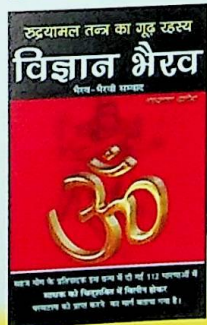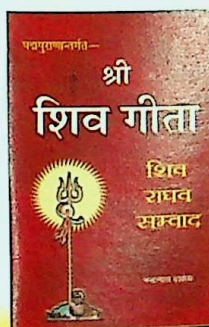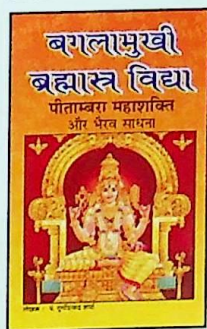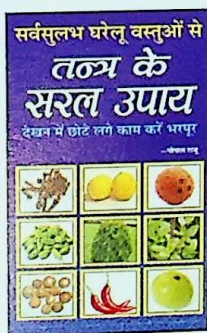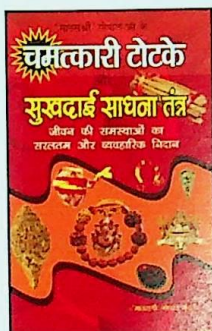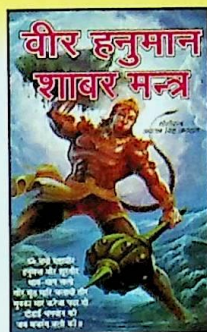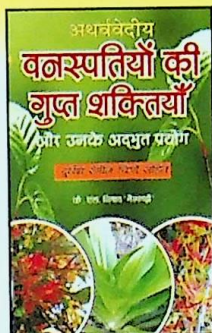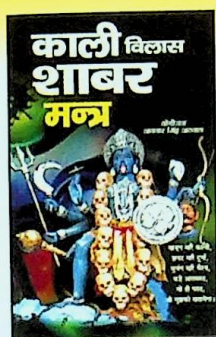
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार-पिन कोड: 249401

2.हर घर में संग्रह करने योग्य ज्ञान ग्रन्थ
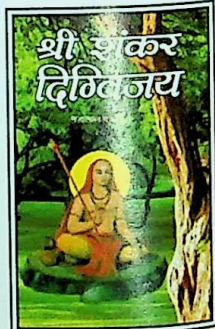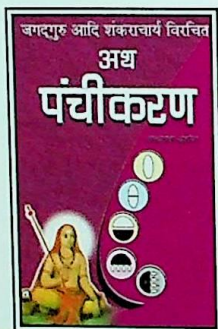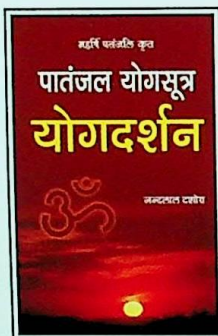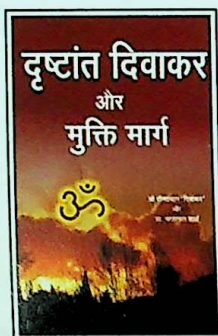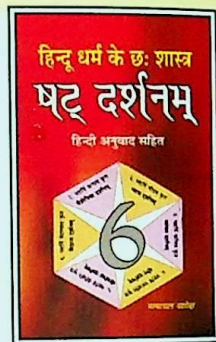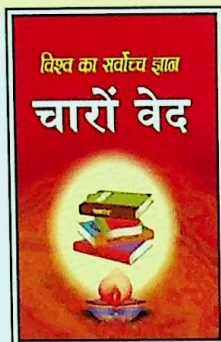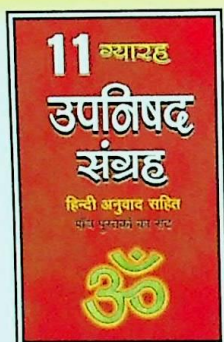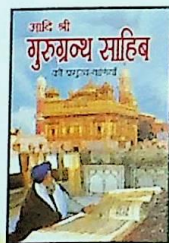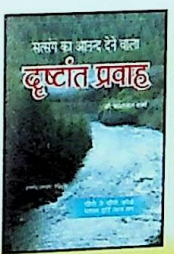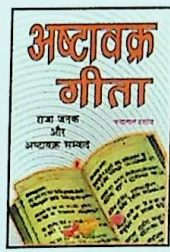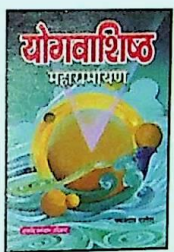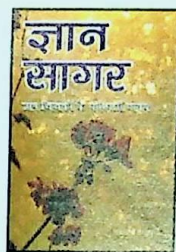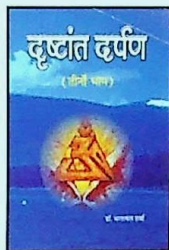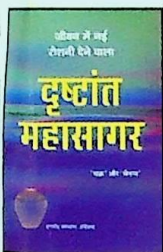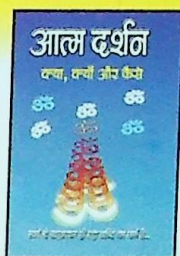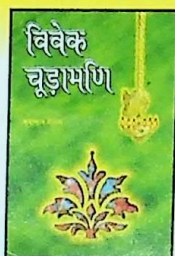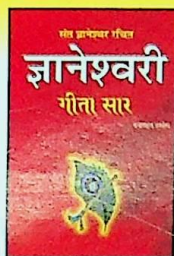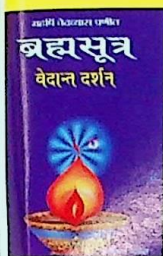
4.मन्त्र,तन्त्र,यन्त्र एवं रत्न विषयक पुस्तकें

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार PH: (01334) 226297
MO.: 0 9012 9318 20
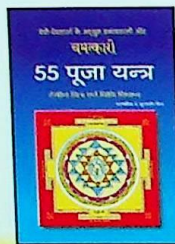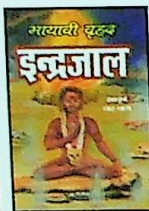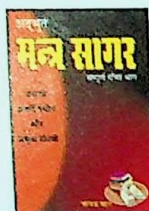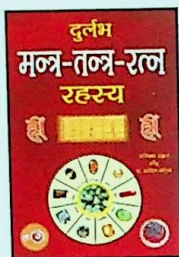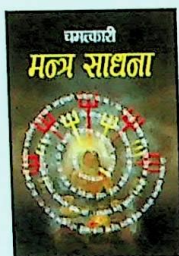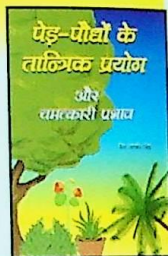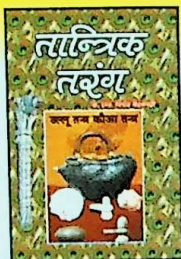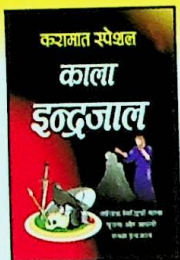
5.प्रख्यात तान्त्रिकों द्वारा रचित विशेष ग्रन्थ
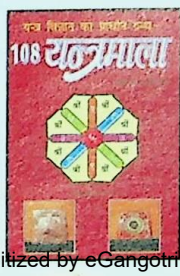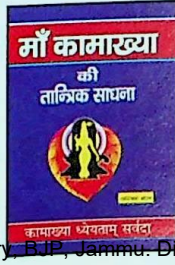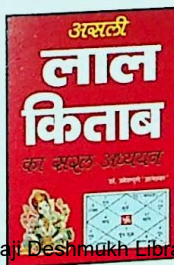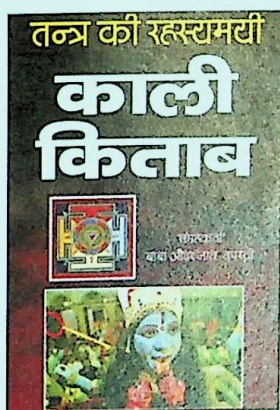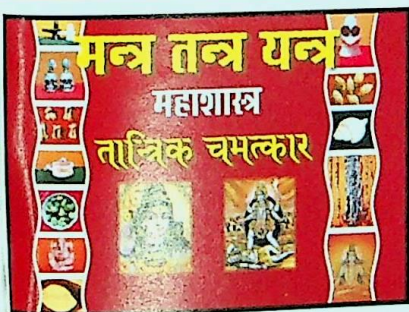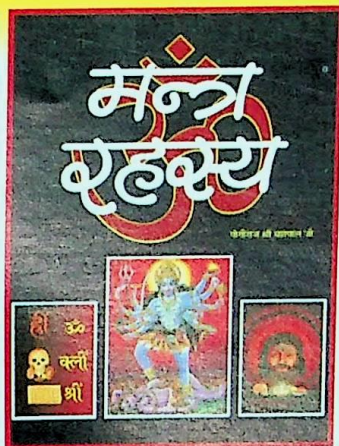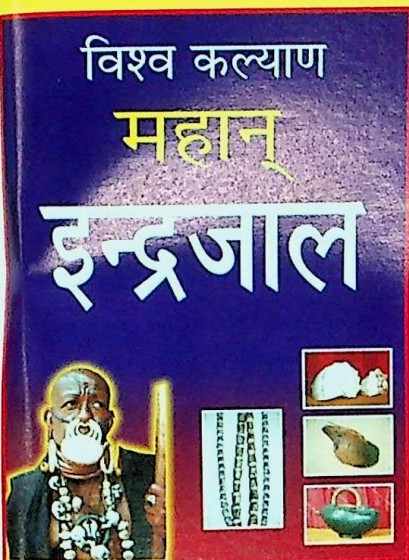
6. महत्वपूर्ण, उपयोगी, संग्रहणीय पुस्तकें
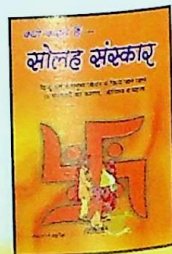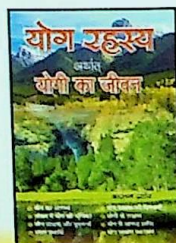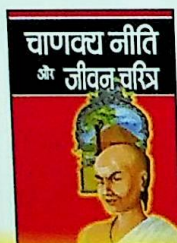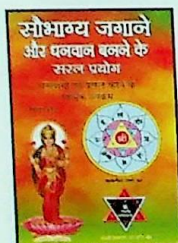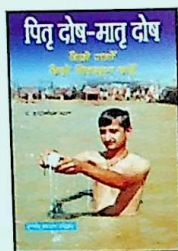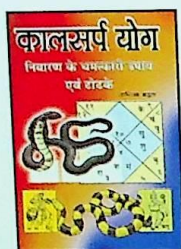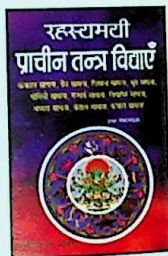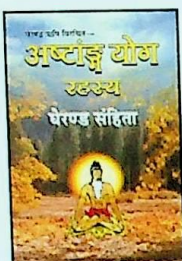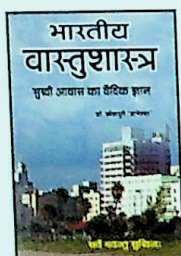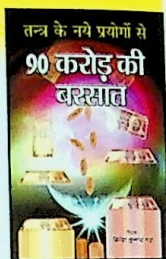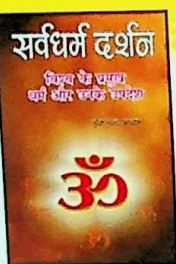
7. हर घर में काम आने वाली उपयोगी पुस्तकें
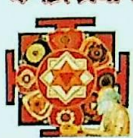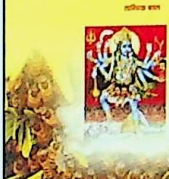
मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं ज्योतिष के किसी प्रयोग अथवा पूजा पाठ के अनुष्ठान में योग्य गुरु का निर्देशन अवश्य लें। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक किसी भी उचित या अनुचित प्रयोग का उत्तरदायी नहीं है।
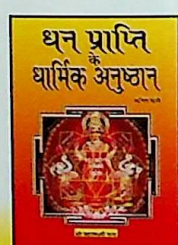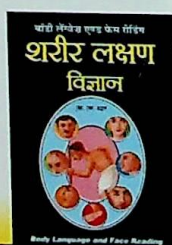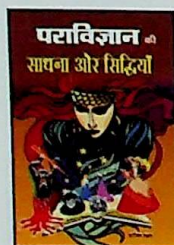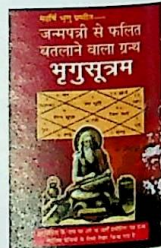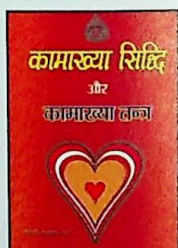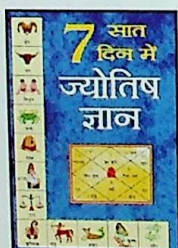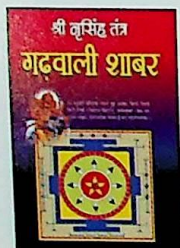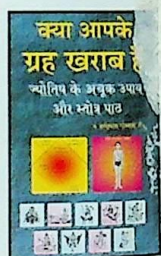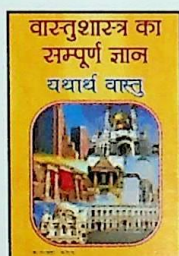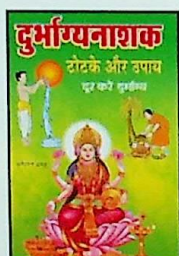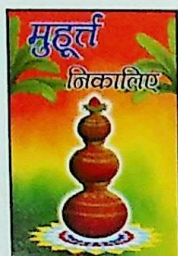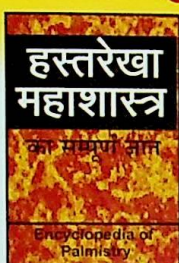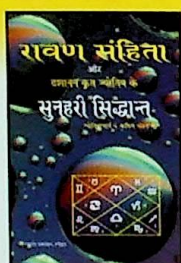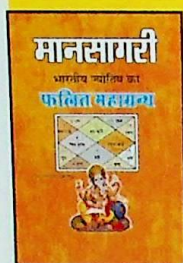
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार
PH: (01334) 226297

विभिन्न विषयों की नवीन पुस्तकें
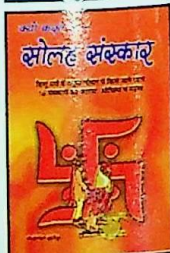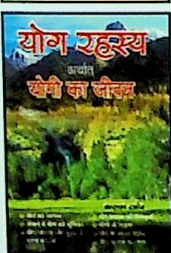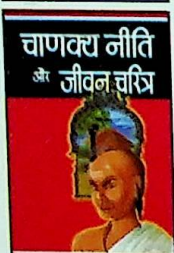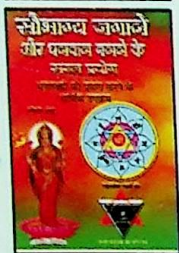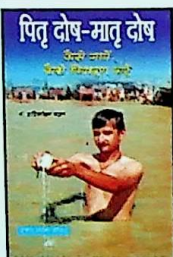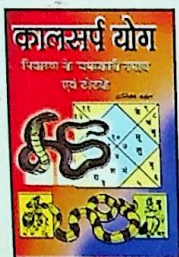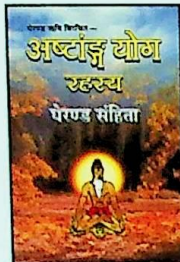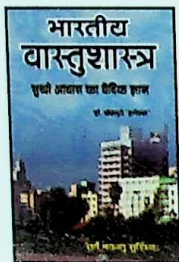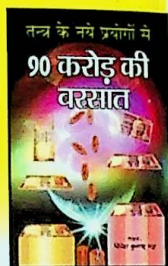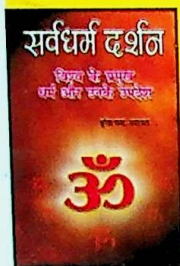
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

PH: (01334) 226297
MO: 0 9012 1818 20